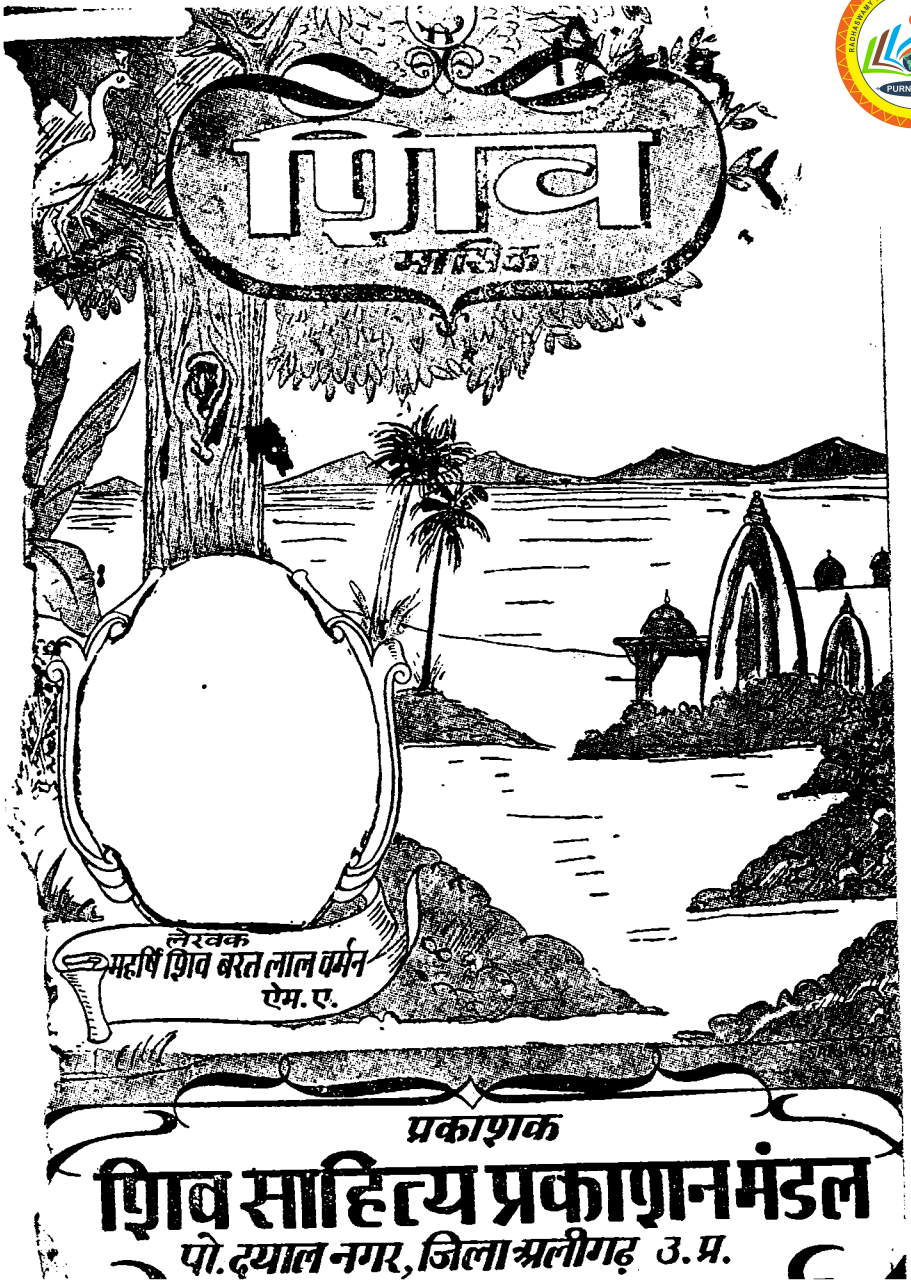

शिव

मासिक

लेखक
महर्षि शिव ब्रत लाल वर्मन
एम. ए.

प्रकाशक

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल

पो. दयाल नगर, जिला अलीगढ़ उ. प्र.

शिव के नियम

(१) शिव का उद्देश्य संत महात्माओं की अमृतवाणी द्वारा देश की सभ्यता व शिष्टाचार तथा सामाजिक, मानसिक शारीरिक आत्मिक स्थिति में सुधार करना तथा घर बैठे सत्संग का लाभ कराना है 'शिव' महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज व परमसंत फकीर चन्दजी महाराज के लेखों को विशेष रूप से प्रकाशित करता है।

(२) 'शिव' हर मास की प्रथम व द्वितीय तिथि को निकलता है इसका वार्षिक मूल्य ६) रु० है

(३) ग्राहकों को चाहिये कि पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर और अपना पता साफ-साफ लिखें उत्तर के लिये कार्ड आना जरूरी है

(४) यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न मिले तो पहिले अपने डाकखाने में पूछताछ करें यदि न मिले तो डाकखाने के उत्तर सहित पत्र आने पर एक हफ्ते के भीतर ही दूसरी प्रति भेज दी जायेगी

(५) प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर 'शिव' के नाम आना चाहिये

(६) सम्पादक सम्बन्धी पत्र व्यवहार देवीचरन मीतल स० सम्पादक 'शिव' लेखराज नगर, अलीगढ़ के नाम करना चाहिये

मैनेजर—शिव साहित्य प्रकाशन मंडल
पोस्ट दयाल नगर (अलीगढ़)

सूचना

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज तथा संतों की वाणी को दयाल मासिक पत्र, उर्दू में प्रकाशित करता है

पता—राधास्वामी जनरल सत्संग, हनम कुन्डा, (वारंगल, आन्ध्र प्रदेश-वार्षिक मूल्य ६।) रु०

'मनुष्य बनो' पत्रिका में संतों के बचन प्रतिमास प्रकाशित होते हैं वार्षिक मूल्य ४) ५०, पता—'मनुष्य बनो' कार्यालय लेखराज नगर, अलीगढ़

* हिंसक मोती *

(ले० महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

—*—

स० सम्पादक—

देवीचरन मीतल

लेखराज नगर, अलीगढ़

—:*:—

सम्पादक, प्रकाशक—

नन्दू भाई

शिव साहित्य प्रकाशन

दयाल नगर, अलीगढ़

मार्च १९७२ | सर्वाधिकार सुरक्षित | मू०)७५

"शिव" (हिन्दी) मासिक पत्र

समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ (नियम ८ फार्म ४) के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशक का स्थान	दयाल नगर, अलीगढ़ ।
२—प्रकाशन अवधि	मासिक
३—मुद्रक का नाम	सतीशचन्द्र मीतल for R.P.P.
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	लेखराजनगर, अलीगढ़
४—प्रकाशक का नाम	नन्दू भाई
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	वीकली बाजार, निजामाबाद (अ.प्र.)
५—सम्पादक का नाम	उपरोक्त नं० ४ के अनुसार
राष्ट्रीयता	" "
पता	" "
६—स्वत्वाधिकारी	नन्दू भाई, शिव साहित्य प्रकाशन परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज होशियारपुर के संरक्षण व निरीक्षण में ।

७—मैं नन्दू भाई यह घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है ।

१—३—७२

नन्दू भाई
प्रकाशक के हस्ताक्षर

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेनमः ।।

शिव

वर्ष १८	माह चैत्र सं० २०२८ वि० मार्च १९७२	तरंग १

* प्रार्थना *

अमृत धार बहाइये सतगुरु जग तारन ।
हम सब काल करम के मारे, दया से अबतो जिलाइये ।।सत०।।
करम न ज्ञान न भक्ति न सेवा, कोई उपाय बताइये ।।सत०।।
काठ की नाव में लोहा भारी, कैसे ही उसको तराइये ।।सत०।।
चरन शरन की प्यास है भड़की, अमृत बूंद पिलाइये ।।सत०।।
तृष्ना अग्नी देह शरीरा, दर्शन देके बुझाइये ।।सत०।।
मैं हूं पतित तुम पतित उधारन, हाथ पकड़ के उठाइये ।।सत०।।
त्राहि त्राहि शरनागत आया, निज पद छाँह दिलाइये ।।सत०।।
राधास्वामी सतगुरु पूरे, सत की राह लगाइये ।।सत०।।

शिव का नया वर्ष

हमारे परमपूज्य परमदयाल फकीरचन्द जो की दया और संरक्षण तथा प्रेमी भाइयों के सहयोग से 'शिव' अब १८ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। आशा है कि आप सबका सहयोग पूर्णरूप से प्राप्त होता रहेगा। हमने एक सच्ची घटना कहानी या उपन्यास के रूप में इस महिने में प्रकाशित की है जो आगे चलकर पूरी की जायगी। यह उपन्यास रोचक आकर्षक तो है ही साथ ही व्यवहारिक जगत में स्त्रियों तथा पुरुषों को शिक्षाप्रद भी है। आशा है पाठक इस पर विचार करेंगे और लाभ उठायेंगे।

—:o:—

—देवीचरन मीतल

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज का जीवन चरित्र व शिक्षा

यह पुस्तक एक मोटे ग्रन्थ के रूप में उर्दू में प्रकाशित हो चुकी है। उनकी अमूल्य शिक्षायें अभी तक हिन्दी में बहुत कम प्रकाशित हुई है। हिन्दी ज्ञाता जनता को इनकी शिक्षाओं से बंचित रह जाना एक दुर्भाग्य की बात है। मगर आजकल कागज छपाई की कीमत पोस्टेज सब बढ़े हुए हैं। इस अकेली पुस्तक को प्रकाशित करने को ही लगभग पांच हजार रुपया चाहिये। इस पुस्तक में उनकी शिक्षाओं का सारांश है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यन्त उपयोगी है। पहिले भी कई बार इसके प्रकाशित करने का विचार प्रगट किया गया था मगर किसी प्रेमी भाई ने इस बारे में सहयोग देने का साहस नहीं किया। परमदयाल जी महाराज की भी ऐसी आज्ञा मेरे नाम उस पुस्तक में लिखी हुई है कि मैं इसे हिन्दी में प्रकाशित करादूं। इसलिये अब वह पुस्तक हिन्दी में तैयार की जा रही है और आशा है कि शीघ्र तैयार हो जायगी। जो प्रेमी तथा दानवीर इस कार्य में सहायता देना चाहें वह महाराज जी को लिखें ताकि यह कार्य शीघ्र पूरा हो सके अन्यथा वह धीरे-धीरे 'शिव' में ही प्रकाशित की जायगी। आशा है हमारे प्रेमी भाई इस ओर ध्यान देंगे।

—देवीचरन मीतल

बैसाखी सत्संग

ता० १३ व १४ अप्रैल ७२ मानवता मंदिर, सुथैरी रोड, होशियारपुर

सखी हो सुनलो हमरो ज्ञाना ।
भात पिता घर जन्म लियो है, नैहर भये अभिमाना ।
रैन दिवस पिया के संग रहत हों, मैं पापिन नहीं जाना ॥

सात वर्ष की आयु से किसी चीज की खोज में निकला था। मौज अन्तरीय भावनावश मुझको सन् १९०५ में दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरण कंवल में ले गई थी। उन्होंने मुझे संत मत की शिक्षा दी। मैंने प्रण किया था कि अपना निज अनुभव संसार को बता जाऊँगा। यह प्रण मैंने इसलिये किया था कि संतों की बाणी में सब धर्म सम्प्रदायों का खंडन था। अपने मन की चंचलता और अज्ञान के कारण संतों की बाणी के असली भाव की समझ नहीं आती थी। संतों के मार्ग में असली वस्तु जहाँ मनुष्य पहुँचता है या संत मत जहाँ पहुंचाता है वह है निर्वाण या निर्वाण से परे। इस विषय पर अपना निज अनुभव कहूंगा कि मैंने निर्वाण या निर्वाण से परे की अवस्था को क्या समझा है। निर्वाण कैसे प्राप्त होता है और निर्वाण प्राप्ति का फल क्या होता है।

मैं आशा करता हूँ कि दूसरे महात्मा भी इस विषय पर ता० १३ व १४ अप्रैल को पधार कर अपना निज अनुभव वर्णन करेंगे।

मैं श्री वशिष्ठ जी, प्रिन्सीपल दिलाराम जी, संत कृपालसिंह जी महाराज और बाबा चरनसिंह जी को निमंत्रण दे रहा हूँ। यह सत्संग है। मेला नहीं है इसलिये केवल जिज्ञासू और इस मार्ग के मुसाफिर लाभ उठायें।

लंगर और रहने का प्रबन्ध 'फकीर लायब्रेरी ट्रस्ट' यथा शक्ति करेगा।

—फकीर

शिव का चन्दा

'शिव' का गत वर्षों का चन्दा बहुत से ग्राहकों पर बाकी पड़ा हुआ है। पत्र भी लिखे गये हैं मगर न कोई उत्तर मिला है न चन्दा प्राप्त हुआ है। आत्म-ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिये यह शोभा की बात नहीं है कि वे इसका चन्दा भी न दें और पत्र को हानि उठानी पड़े।

अब नया वर्ष शुरू हो रहा है। जिन पर चन्दा बाकी है वह इस वर्ष का तथा बकाया तुरन्त भेजदें अन्यथा पत्र भेजना बन्द कर दिया जायगा।

—श्रीप्रकाश गोविल
मैनेजर 'शिव'

क्षमा याचना

शिव' जनवरी व फरवरी सन् १९७२ का एक अंक था मगर यकायक शिव के मैनेजर श्री श्रीप्रकाश जी की तबियत खराब हो गई और वह उसको समय पर न भेज सके। इसके लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सूचना

जिन ग्राहकों को पत्र के मिलने तथा चन्दा भेजने के बारे में लिखा पढ़ी मैनेजर 'शिव' दयालनगर से करनी चाहिये वर्ना मुझे लिखने में उत्तर देने में समय लग जाता है।

—देवीचरन मीतल

हिंसक मोती

ईश्वर की आंख

मुकद्दमा

"मैं नहीं समझता था कि तू इतनी खतरनाक है।"

"मैं तो जानती थी कि मैं क्या हूँ और तुम राह पर नहीं आये तो मैं अकेली तुम्हें ऐसा दंड दूँगी कि जन्म जन्म तक याद रहेगा।"

"मैं ब्राह्मण हूँ और हिन्दू गौड़ ब्राह्मण पर दया करते हैं।"

"और मैं कौन हूँ ? मैं भी तो ब्राह्मणी हूँ।"

"तब तो और भी तुझे मुझ पर दया करनी चाहिये।"

"नहीं, ब्राह्मण ब्राह्मण पर दया नहीं करते। हां, यदि मैं ब्राह्मण न होती तो तुम दया की प्रार्थना कर सकते थे।"

हिन्दू को दया और भलाई की सच्ची समझ नहीं है। गौ, ब्राह्मण का शब्द मुँह से निकला और वह पिघल गये।

"तो भी हिन्दू है। ब्राह्मण पर दया कर।"

"मैं ऐसी वैसी हिन्दू नहीं हूँ। मैं ब्राह्मणी हिन्दू हूँ। मेरा काम समझ बूझ और अवसर के अनुसार होता है।"

"यह तेरी नेकनामी पर बदनामी का धब्बा रहेगा।"

"मैं न नेकनाम हूँ न बदनाम हूँ। न उसकी लालसा न इसका भय। मैं स्वयं न्याय हूं और न्याय अंधा होता है।"

"न्याय के साथ रहमदिली भी होनी चाहिये। इस देश में आज तक किसी हिन्दू ने गौ, ब्राह्मण के साथ ऐसी निर्दयता नहीं की थी।"

"तुम बड़ी गलती पर हो। सोच विचार करने की आदत नहीं है। इसी दक्षिण में रामचन्द्रजी आये थे। बाली को मारा जो ब्राह्मण था। इसी जगह उस वीर हिन्दू क्षत्री ने लाखों ब्राह्मणों को अपने तीरों की अग्नि से भस्म किया। रावण ब्राह्मण था। पंडित, सामवेद का पाठी ! रामायण को तुमने सुना पढ़ा होगा। यदि नहीं जानते तो मुझसे सुनो—'यक लाख पूत, सवालाख नाती। वा रावण घर दिया न बाती।' लंका सा कूट समुद्र सी खाई। ता रावण की सुधि नहीं पाई।'

"दया करो ! दया करो !! दया करो !!!"

'जिस पुल पर से तुमको जाना था, उसे तुमने स्वयं तोड़ दिया। तुमने आज तक किसी युवती पर दया नहीं की, इसलिये तुम्हारे लिये दया का हक नहीं है। मैंने इस समय राम की हैसियत ले रक्खी है। उन्होंने बाली और रावण को कठोर दण्ड दिया। मैं तुमको दंड दूंगी। तुमने वही पाप किये हैं जो बाली और रावण ने किये थे। अब तुम दंड पाने के लिये तैयार हो जाओ। जब पाप किये तो तुम्हारे अतिरिक्त दंड किस को दिया जायगा।"

"तू स्त्री नहीं है !"

'नहीं तो न सही ! मैं स्त्री हूँ और स्त्रियों का बदला लेरही हूं।"

"कोई हिन्दू ब्राह्मण पर हाथ न उठायेगा।"

मुझे इसकी चिन्ता नहीं। पापी ब्राह्मण को दंड देते समय हिन्दू डरपोक हो जाते हैं। यह ठीक है। इसी कारण ईश्वर ने ब्राह्मणी के रूप में मुझे भेजा है। मैं अपनी तलवार से तुमको कतल करूँगी। तुम ब्राह्मणों के नाम पर धब्बा हो। तुम असहाय हिन्दुओं के लिये

भय का कारण हो। इन डरपोकों को बहुत दंड मिल चुका। इनका लाज नहीं है कि एक आदमी इनके मान सम्मान को नष्ट करता चला आरहा है और इन्हें सिर उठाने का साहस नहीं है। यह स्वयं नंगे आदमी हैं। और इनसे कहीं अधिक बुरे तुम हो, जो ब्राह्मण होकर धर्म की राह छेड़ कर अधर्म की राह अपना रक्खी थी। अब ईश्वर सहन करना नहीं चाहता। मैं उसकी उत्तराधिकारी बनकर आई हूँ।"

"अब तनिक भी क्षमा का अवसर नहीं ?"

"नहीं' ! बर्तन भर गया है। अब वह झलक रहा है। तुम तुरन्त अन्तिम समय के लिये तत्पर हो जाओ।"

"मैं एक बार और दया की प्रार्थना करता हूँ। अब जीवन में परिवर्तन कर लूंगा।"

"मैं एक बार और दया की प्रार्थना को अस्वीकार करती हूँ।" "तुम आत्मिक और शारीरिक दृष्टि से कोढ़ी हो। तुम्हारा संसार से चले जाना ही आवश्यक है।"

प्रथम अध्याय

जैसे को तैसा

भद्राचल छोटा पहाड़ी क्षेत्र है जो गोदावरी नदी के किनारे किनारे कुछ दूर तक चला जाता है। भद्र नामी कोई तपस्वी हुआ है जिसे राम के दर्शन की अभिलाषा थी। यही इच्छा उसकी तपस्या का इष्ट था। तप करते करते वर्षों बीत गये। राम नहीं

आये । आयु अधिक होगई । उसी अभिलाषा को लिये हुये उसने प्राण त्याग दिये और पृथ्वी में मिल गया । राजचन्द्रजी देर में आये । जब उनका पाँव भूमि के उस भाग पर पड़ा जहां ऋषि का शरीर घूल में मिल गया था, वह भूमि से ऊँचा उठ गया । उसी पहाड़ी टीले का नाम भद्र ऋषि के कारण भद्राचल होगया । ईश्वर जाने इस कहावत में कहाँ तक सचाई है । प्रत्यक्ष में यह विश्वास की बात मालूम होती है । सम्भव है प्राकृतिक नियम पर गोदावरी के किनारे की भूमि ऊँची होगई हो । चूंकि उस पर ऋषी का झोंपड़ा था, मानने वालों ने इसे चमत्कार समझ कर उसे भद्राचल का नाम दे दिया हो । रामचन्द्रजी का जीवन उनके भक्तों की दृष्टि में न केवल घटनाओं से भरा हुआ है किन्तु चमत्कारों से भी भरा है । उत्तर में पत्थर की शिला बनी हुई अहिल्या उनके पांव के पड़ते ही जीवित होकर आकाश की ओर उड़ कर चली गई । यहां दक्षिण में भद्र ऋषि के शरीर को मिलाने वाली भूमि उभर कर थोड़ी ऊँचाई का पहाड़ बन गई । यह लोगों का विश्वास है ।

उसके बाद में तानाशाह के तहसीलदार रामदास कबीर पंथी ने उसी पहाड़ी की चोटी पर रामचन्द्र जी का मन्दिर बनवाया, जो अब तक उनके विश्वास का स्मार्क है । असंख्य आदमी प्रति वर्ष उसके दर्शन के लिये जाते हैं । मन्दिर सुन्दर नहीं है । उसमें जाने का मुख्य द्वार या फाटक विशाल कहा जा सकता है लेकिन यह साधारण मकान है ।

तानाशाह यद्यपि मुसलमान था मगर रामदासजी को सच्चा साधु समझ कर उसने बीस हजार की सम्पत्ति मन्दिर की रक्षा और चलाने के लिये वक्फ करदी, जो अब तक उसके काम आती है । यही उसकी आमदनी का साधन है ।

समय बदलता रहता है । औरंगजेब बादशाह ने तानाशाह का राज्य छीन लिया । तानाशाह उसी लड़ाई में मर भी गया । बाद

को आसफजाह निजाम ने उस पर अधिकार कर लिया । वह दक्षिण का बादशाह होगया । मन्दिर की जागीर बदस्तूर रक्खी और वह अब तक उसी तरह है ।

मन्दिर एक हिन्दू राजा की राजधानी में था जिसका वर्तमान नाम पालूचा समेस्तान है । राज अब भी है किन्तु उसे मन्दिर के प्रबन्ध नाम से कोई सम्बन्ध दिखाई नहीं देता । मन्दिर का प्रबन्ध निजाम सरकार के हाथ में है । जैसे भद्राचल का अस्तित्व चमत्कारक है वैसे ही मन्दिर का प्रबन्ध भी चमत्कार से रहित नहीं है । मन्दिर तो निजाम का है और उसके चारों ओर की कुल जमीन अंग्रेजी सरकार की है । मन्दिर के अन्दर निजाम का शाशन है । किन्तु मन्दिर के बाहर सड़कों आदि पर अंग्रेजी कर्मचारी काम करते हैं । शायद अंग्रेजी राज्य और निजाम में इस तरह का समझौता हुआ होगा ।

यों तो थोड़े बहुत लोग इस जगह आया ही करते हैं लेकिन हर बारहवें वर्ष और साठवें वर्ष जोर की यात्रा होती है । लाखों की संख्या में यात्री इकट्ठा हो जाते हैं । उस समय भद्राचल की भूमि उन सड़े गले फूलों के समान हो जाती है जिनमें अधिक कीड़े पैदा होकर रेंगने लगते हैं । थोड़ी जगह असंख्य आदमी जिन्होंने यह दृश्य देखा है वह इस उपमा से सहमत होंगे । यात्रियों की भीड़ सचमुच उसे दुर्गन्धित और अपवित्र बना देती है । बीमारी फैलती है और सरकार को प्रबन्ध करने में सहूलियत नहीं होती ।

सन् १९२३-२४ में साठ साला मेला लगा था । मद्रास और बम्बई के कुल जिलों के आदमी लग भग पाँच लाख इकट्ठा हुये थे । कई दिन बड़ी भीड़ भाड़ रही । कई आदमी कुचल कर मर भी गये । यद्यपि सरकारी प्रबन्ध हमदर्दी और प्रेम के साथ किया गया था फिर भी भीड़ भाड़ के समय भयभीत घटनायें हो जाना साधारण बात है ।

लोग आये । गोदावरी में स्नान किया । छोटे मन्दिर में धक्कम-

धक्का करते हुये गये। मूर्ति का दर्शन किया। बड़ी कठिनाई से बाहर आये। यह दृश्य कई दिन रहा और देखने योग्य था।

इसी अवसर पर एक सुन्दर युवती मरहठी जाति की प्रायः मन्दिर से दर्शन करके गोदावरी के किनारे प्रति दिन आकर बैठी रहती थी। सब उसे देखते थे लेकिन किसी को क्या पड़ी हुई थी जो उससे मिलता और हाल पूछता। फिर भी एक युवक तेलंगी हिन्दू की दृष्टि हर समय इस लड़की पर रहती थी। पहिले वह उसे दूर से देखता और सोचता रहता था कि यह कौन है और किस उद्देश्य से आई है। वह अकेली थी। जब युवक को इसका निश्चय होगया कि वह अकेली है इसे साहस हुआ, उसके पास आया और दबे हुये शब्दों में प्रश्न किया—"सुन्दरी तू कौन है ?"

लड़की ने इसकी ओर निगाह की। उत्तर दिया—मैं रचना में ऐसी जीव हूँ जिसके बारे में कौन, क्या और कैसा का शब्द प्रयोग नहीं किया जाता। तुम क्यों पूछते हो ?"

युवा—"इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरा प्रश्न सभ्यता के विरुद्ध है लेकिन मैं कई दिन से तुमको यहां अकेली देखता हूँ।"

लड़की—"मैं अकेली हूँ इसमें सन्देह नहीं किन्तु तुम्हारे पूछने का प्रयोजन क्या है ?"

युवा—"यदि तुमको किसी तरह का कष्ट हो या कोई आवश्यकता हो तो मुझे सेवा करने का गौरव मिले।"

लड़की—"तुम भले आदमी मालूम होते हो इसलिये यह विचार मन में पैदा हुआ है। लेकिन न मुझे किसी की सेवा की आवश्यकता है न किसी तरह का कष्ट है। इसलिये तुम्हारी हमदर्दी से लाभ उठाना नहीं चाहती।"

युवा—"यदि तुम्हारे साथ कोई नहीं है तो मैं साथ देने को तैयार हूँ।"

लड़की—"मैं नहीं चाहती कि कोई पुरुष मेरा साथ दे। अच्छा

यह है कि तुम अपना काम देखो।"

युवक को आश्चर्य हुआ। वह अपने मन में लज्जित हुआ।

कई आदमी उनको बात चीत करते देख कर आस पास इकट्ठा होगये। मनुष्य स्वाभाविक विचित्रता का पुजारी है। जहां दो व्यक्ति यात्रा के अवसर पर एक जगह बात करने लग जाते हैं, भीड़ इकट्ठा होजाना साधारण सी बात होती है।

दोनों को बुरा लगा होगा। युवक के मुँह से केवल यह शब्द निकल सके—"तुम अकेली हो। मैं भी अकेला हूँ। इसलिये तुम्हारी ओर आकर्षित हुआ।"

लड़की ने इन शब्दों को घृणा के कान से सुना। उठी और मन्दिर की ओर चली गई। भद्राचल में कोई धर्मशाला नहीं है। यात्रियों के आराम या ठहरने का कोई प्रबन्ध नहीं है। मन्दिर के अन्दर तो जगह नहीं है। विवश बाहर खुले हुये मैदान में ठहरते हैं और वहां ही खाते पीते, बैठते उठते और सोते हैं। लड़की वहां से उठ कर एक वृक्ष के नीचे आकर बैठ गई।

द्वितीय प्रसंग

आकर्षण

युवक के चित्त को धक्का पहुँचा। वह उस भीड़ को अपने मन में बुरा भला कहने लगा होगा जिसके आने से उसकी बातचीत की सूरत बिगड़ गई। वह भी वहां से खिसक गया। उसके मन में क्या क्या विचार पैदा हुए होंगे, उनके बारे में कोई क्या कह सकता है।

दूसरे दिन लड़की फिर वहां आकर बैठी। वृक्ष की छाया थी। जगह फिर भी भीड़ भाड़ से खाली नहीं थी। ऐसे अवसरों पर

एकान्त का मिलना असम्भव है।

मरहटी लड़की आकर बैठी। तेलंगी युवक उसकी ताक में लगा था। उसके मन में लगन थी। वह भद्राचल में रामचन्द्र जी की मूर्ति के दर्शन करने आया होगा। इसका किसको सन्देह होता है। धार्मिक विश्वास के हजारों ढंग हुआ करते हैं। उनमें से एक रिवाजी पूजा भी है जिसमें मनका थोड़ा तत्व शामिल होता है। लेकिन अब उसे सुन्दरता की देवी नजर आगई थी जिसने योंही उसके मन में उसी के विचार से कल्पित मन्दिर बना लिया था। उसकी आँखें उस भीड़ में उसे खोज कर रही थीं। इधर गया उधर गया। मन्दिर के अहाते में पहुँचा। वहां वह दिखाई नहीं पड़ी, नदी के किनारे ढूंढा। वहां कहाँ पता था! अन्त में पहिले दिन के वृक्ष का विचार आया। वहां पहुँचा। वह दिखाई पड़ गई। वह अपने ही चुम्बकीय आकर्षण से खिचा हुआ धक्कम धक्का करता हुआ उसके पास जा पहुँचा।

"आप यहां आकर बैठी हुई हैं।"

लड़की ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके त्यौर बदल गये जिनसे अप्रसन्नता प्रगट होने लगी। आँखें मनुष्य के शरीर में विचित्र तरह की इन्द्रियाँ हैं। यह सारे शरीर का तत्व हैं। मनुष्य और पशु के शरीर में अमृत हैं। इनमें घृणा का माद्दा है। इनमें प्रेम का सामान है। इनमें जादू है।

उसे खिची हुई तबीयत पाकर उसको और भी साहस हुआ।

"मैं आज तुमको घंटों से ढूँढ़ रहा हूँ।"

वह फिर क्रोधित हुई। दूसरी ओर मुँह फेर लिया। उसको सम्भव है बुरा लगा हो लेकिन दिल की लगी भी तो बुरी होती है। चित्त को वश में न रख सका। फिर बोला।

"तुम बोलती नहीं हो। सुना नहीं। मैं घंटों से तुमको ढूंढ रहा हूं।"

इस बार वह बोली—

"आखिर मुझे क्यों ढूंढ रहे हो ? तुमसे वास्ता ! मुझे छेड़ छाड़ पसन्द नहीं है।"

'मैं क्या करूँ। जैसे उड़ते हुये पक्षी सांप कीं आँख देख कर विवश हो जाते हैं या जैसे छिपकली मक्खी पर जादू का प्रभाव डाल कर उसे गति हीन बना देती है वैसे ही इस समय मेरी दशा होरही है।"

'लेकिन मुझे तो तुम्हारी ओर तनिक भी आकर्षण नहीं है। मैं न सांप हूँ न छिपकली हूं।"

"ठीक है ! उपमा उपयुक्त नहीं है लेकिन उदाहरण इतना बुरा नहीं है।"

"आखिर यह क्यों हैं ! तुम्हें मेरी क्या पड़ी हुई है।"

"इसका उत्तर मेरे पास नहीं है।"

"तो जाओ—अपना काम देखो। मुझे छोड़ दो। तमाशाई इधर आरहे हैं। मुझे तुम्हारी यह हरकत जरा भी पसन्द नहीं आती।"

बात भी सच्ची थी। उनकी बातें आस पास के खड़े हुये आदमी सुन रहे थे।

युवक ने फिर कहा—

'तमाशा गाहे सूरत है तुम्हारी, इस खुदाई में।
तमाशा देखने वाले, करें तो क्या करें आखिर।"

लड़की ने कहा—'यह अच्छा नहीं है। इसका परिणाम अच्छा न होगा।

युवक—"अच्छा या बुरा सोचने का दिल खोगया।"

लड़की—"अच्छा होता तुम अपना काम करते। तीर्थ में देवता का दर्शन करने आये हो। जाओ दर्शन करो। मेरे पीछे न फिरो।"

युवक—'मैंने निर्णय कर लिया।"

बात चीत करते हुये थोड़ी ही देर हुई थी, लोग अधिकतर आने

लगे। यह प्राकृतिक बात थी। लड़की को बुरा लगा। वह उठी और अपने निवास स्थान की ओर चल दी। युवक भी फासला देकर उसके पीछे पीछे छाया की तरह चला। उसका मन्तव्य इस अवसर पर केवल इतना ही था कि उसके ठहरने के स्थान को जान ले। चूंकि भद्राचल की बस्ती बहुत छोटी है और गोदावरी के किनारे बसी हुई है उसको परिचय प्राप्त करने में देर नहीं लगी। लड़की किसी दुकानदार बनिये के घर में ठहरी हुई थी।

———

तृतीय प्रसंग

आपस में लगावट की बातें

मेले की भीड़ भाड़ छट गई। केवल एक सप्ताह तक भीड़ थी, लोग आये, न्हाये धोये, दर्शन किया और अपने घरों को लौट गये। भद्राचल तक रेलवे लाइन नहीं है। हैदराबादियों को बैलगाढ़ी पर आना जाना पड़ता था। मदरासी राज महन्दरी तक नदी के रास्ते से जाते हैं। फिर रेल पर सवार होकर अपने अपने घर का रास्ता लेते हैं।

भीड़ की अधिकता से साधारणतया मेलों में प्राय: जलवायु बिगड़ जाती है। ताऊन और हैजा का जोर हुआ। कई आदमी इन रोगों के शिकार हुये। यह उनके अतिरिक्त थे जो भीड़ की धक्कम-धक्का में पड़कर मर गये थे। भगदड़ पड़ गई। जिसकी सींग जिधर समाई, वह उसी ओर चल दिया।

यदि नहीं गये तो तेलंगी युवक और मरहटी लड़की ! तेलंगी तो किसी और धुन में था। मरहटी लड़की साधुवृति की थी। वह यहां घूमने फिरने आई थी। शरीर पर गेरुआ वस्त्र था। हाथ में सुमिरनी रहती थी। यह उसके बचाव के साधन थे। हिन्दू जिसे इस ढंग में या इस वस्त्र में देखते हैं, उसका आदर करते हैं।

यह दोनों भीड़ के छटने के बाद भी कई दिन वहां रहे। लड़की बेपरवाह थी। युवक किसी और धुन में था। इस कारण वह वहां ठहरा रहा।

लड़की उसी वृक्ष के नीचे अकेली बैठी हुई थी। पहले वृक्ष ही वृक्ष था। अब कई वर्ष बाद सन १९२८ में उसके पास किसी भक्त ने हनुमानजी का छोटा सा मन्दिर बनवा दिया है किन्तु उसमें दो चार आदमियों के बैठने के लिये भी स्थान नहीं है।

युवक आया। लड़की को नमस्कार किया। इसने नमस्कार का उत्तर मुस्कराकर दिया। उसकी इस मुस्कराहट को उसने अपना साहस बढ़ाना समझा। निकट आकर बैठ गया।

युवक ने पूछा—"आप अभी तक यहाँ ही हो !"

लड़की ने उत्तर दिया—"मैं जाती भी तो कहाँ जाती। साधु का घर तीर्थ या मन्दिर और यात्री का घर धर्मशाला। क्या तुमने अब तक मेरी चाल ढाल को देख कर यह नहीं समझा कि मैं कौन हूँ।"

युवक—"यह तो मैं समझ गया कि तुम ब्रह्मचारिणी हो। लेकिन यह रंग ढंग किसी विशेष उद्देश्य से है।"

लड़की—वह उद्देश क्या है ?"

युवक—"तुम विधवा हो। ब्राह्मणी हो। संन्यास के वस्त्र मसहलत से पहिन रक्खे हैं ताकि कोई खेड़छाड़ न करे। और तुम इस भेष में जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सको।"

लड़की मुस्कराई। "तो तुमको मेरे ब्रह्मचारिणी या सन्यासी

होने में सन्देह है !

युवक—"इसके अतिरिक्त मैं और क्या कह सकता हूँ।"

लड़की—"तुम्हारा विचार कहीं तक ठीक है और कहीं तक गलत है। मैं विधवा ब्राह्मणी हूँ, यह तो ठीक है लेकिन मैंने भीख माँगने के लिये ब्रह्मचारिणी का भेष बना रक्खा है, गलत है। मैं भिखारी नहीं हूं। न भीख माँगती हूँ।"

युवक—"तब मेरे अनुमान का एक भाग गलत निकला।"

लड़की—"बेशक गलत है। खैर ! इतना तो तुमने मुझ से पूछ लिया। अब मुझे भी तुमसे प्रश्न करने का अधिकार है।"

युवक—"यह अधिकार तो तुमको हर समय था। तुमने मुझसे पूछा नहीं वरना मैं सन्तुष्टि कर देता।"

लड़की—"अब क्या होगया ! उस समय न सही तो अब सही।"

युवक—"पूछो। मैं उत्तर देने को तत्पर हूँ।"

लड़की—"मुझे तुमसे पूछने की कभी आवश्यकता नहीं थी और न अब है। तुम्हारी उपस्थिति और व्यर्थ की छेड़ छाड़ अब मुझे पूछने के लिये विवश कर रही है। मैं पूछती हूँ कि तुम मेरे पीछे इतने क्यों लगे हुये हो ?"

युवक—"इसका उत्तर तो मैं पहिले दे चुका हूँ। यदि तुमको मेरी सेवा की आवश्यक्ता हो तो मैं उपस्थित हूँ।"

लड़की—"मैं भी कह चुकी थी कि मुझे तुम्हारी सेवा की आवश्यकता नहीं है। फिर वही बात कहती हूँ कि मैं तुम्हारी सहायता लेने को धन्यवाद के साथ अस्वीकार करती हूँ।"

युवक—"यह तो तुमने कहा था लेकिन यह उत्तर काफी नहीं था। तुम पढ़ी लिखी मालूम होती हो। यह पढ़े लिखे वर्ग का सभ्यता का उत्तर था।

लड़की—"मान न मान मैं तेरा महमान ! जब मुझे तुम्हारी

सहायता की आवश्यकता ही नहीं है तो फिर मैं इसके सिवाय और कहती क्या ? यह तुमने कैसे जाना कि मैं पढ़ी लिखी हूँ ?"

युवक—तुम मरहटी हो। चहरे से प्रगट है। तेलंगी नहीं हो। मरहटे इतनी अच्छी तरह उर्दू नहीं बोल सकते।"

लड़की—"मैं उर्दू नहीं जानती। हां हिन्दी भाषा जानती हूँ।"

युवक—"हिन्दी उर्दू एक ही चीज है। मुझे हिन्दुस्तानीं कहना चाहिये था। मैंने उर्दू कह दिया। हमारे हैदराबाद में हिन्दुस्तानी भाषा को उर्दू ही कहते हैं।"

लड़की—"तो तुम हैदराबाद के निवासी हो। यह मालूम होगया। यहाँ तो मैंने हिन्दुस्तानी भाषा को मुसलमानी भाषा या तुर्की बोली कहते हुये सुना है।"

युवक—"इसका कारण यह है कि हैदराबाद में मुसलमानों का का राज हैं। मुसलमान ही अधिकतर हिन्दुस्तानी भाषा बोलते हैं। वह हिन्दुस्तान से आये थे। और अपने साथ बाप-दादा की भाषा भी लाये थे। उसका रिवाज होगया। अब दफ्तरों में भी यही भाषा चालू है। मुसलमान तो इसे साधारणतया बोलते हैं। तेलंगी और मरहटे कर्मचारियों को भी विवश इसको जानना पड़ता हैं।"

लड़की—"यह प्रसन्नता की बात है। हिन्दुस्तान की भाषा का भविष्य बहुत अच्छा मालूम होता है। केवल यही एक भाषा है जो देश के प्रत्येक भाग में बोली जा सकती है और सीखने में बहुत सरल है। तुम इसको जानते हो यह खुशी की बात है।"

युवक—"मैंने इस भाषा की शिक्षा पाई है।"

लड़की—"बहुत अच्छा ! अब बहुत प्रश्नोत्तर हो चुके। अब तुम मेरा पीछा छोड़ दो। मैं पुरुषों से बात चीत करने में हिचकती हूँ।"

युवक—"लेकिन मेरा प्रयोजन यहां तक ही सीमित नहीं है।"

लड़की—तो और जो कुछ पूछना है शीघ्र पूछ कर चले जाओ। और मेरे पीछे न पड़ो। यह अच्छी बात नहीं है।"

युवक—"तुम कहां की रहने वाली हो ?"

लड़की—' घर बार से क्या फकीर को काम ।
क्यों लीजिये छोड़े गाँव का नाम ॥

इससे तुम्हारा लाभ ही क्या है ? जब मैं निस्वार्थ हूँ तो यह पूछ-गछ अनुचित प्रतीत होती है। कहीं तुम पुलिस के कर्मचारी तो नहीं हो ?"

युवक हँसा—"नहीं मैं यहाँ के एक गांव का पटेल और साथ ही पटवारी भी हूँ। यह मेरे खानदान के मौरूसी पद हैं। कुछ सरकार की ओर से औहदा है। मैं पुलिस से सम्बन्ध नहीं रखता।"

लड़की—"तब तो तुम बड़े आदमी और अच्छे घराने के हो। इन कारणों से और भी उचित है कि तुम मेरे पीछे न लगो।"

युवक—"कहना सरल और करना कठिन है।"

लड़की—"कोई कारण भी तो होना चाहिये।"

युवक—"मन में है, जिभ्या पर नहीं आता। जुबान पर आने को होता है और मन उसे रोक देता है। बड़ी दुविधा में जान पड़ी है।

लड़की उठी और बनिये की दुकान की ओर चलदी।

वह दिल से अप्रसन्न थी। इस युवक की छेड़ छाड़ उसे पसन्द नहीं थी।

चतुर्थ प्रसंग

भद्राचल से कूच

लड़की समझ गई कि तेलंगी युवक बड़ा सिद्धान्तहीन है। और बुरी तरह पीछे पड़ा हुआ है। इसके हृदय में गेरुआ वस्त्रों का भी

आदर नहीं है। साथ ही यह भी समझ गई थी कि यह धनी और इज्जत वाला है। जब सिद्धान्तहीन धनी किसी के पीछे पड़ते हैं तो उनकी दृष्टि परिणाम पर नहीं रहती। जो जी में आता है कर डालते हैं। यह नियम की बड़ी पावन्द थी।

वह रात भर सोचती रही। प्रातःकाल होते ही वह बनिये का हिसाब चुकता करके बिना कहे सुने किसी ओर चलदी।

युवक दिन भर इधर उधर ताक झांक करता रहा। वह दिखाई न पड़ी। दक्षिण की स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं। वह खुले खजाने भीतर बाहर घूमती फिरती रहती हैं। दिन किसी तरह बीता। रात आई। वह भी बीत गई। सुबह हुई। दो पहर दिन चढ़ आया। लड़की गोदावरी में नहाने नहीं आई। उसे सन्देह हुआ। बनिये की दुकान पर पहुँचा। बनिया तेलंगी नहीं था, किन्तु हिन्दुस्तान का कान्य-कुब्ज ब्राह्मण था। दाना पानी वहां खींच लाया। जीविका की कोई सूरत नहीं देखी। आटा, दाल, चावल की दुकान करली। इस तरह वह बनिया कहलाने लगा। युवक ने उसे पूछा—"तुम्हारे यहां एक बाई रहती थी। वह कहां गई ?"

बनियां—"कौन बाई ? मेरी दुकान में कई बाई आकर ठहरी थीं।

युवक—"वह मरहटी थी।"

बनियाँ—"मेरी दुकान में इस बार जितनी स्त्रियाँ ठहरीं थीं सबकी सब मरहटी थीं। तेलंगी कोई नहीं थी।"

युवक—"वह अभी युवा थी और गेरुआ वस्त्र पहिनती थी।"

बनियां—"यों कहो हम सब उसे भक्तिनी बाई कहते थे। तुमको उससे क्या काम है ?"

युवक—"वह मेरी परिचत थी।"

बनियां—यह बिल्कुल झूठी बात है। भक्तिनी बाई का जानकार यहां कोई नहीं था। न कोई उसकी खोज में आता था।"

युवक—वह बाहर मुझ से मिला करती थी।"

बनियां—"वह पुरुषों के मेल मिलाप से कतरानी थीं। कैसे मानूं कि वह तुमसे मिला करती थी।"

युवक—"यार तुम तो पचायत करने लगे। जो बात पूछता हूँ उसका उत्तर देते हो या चौधरात करते हो।"

बनिये को बुरा लगा। "उत्तर क्या दूं! कोई ठौर ठिकाने की बात भी हो, या यों ही उत्तर दू।"

युवक—"वह बाई कहां है?"

बनियाँ—"मुझे नहीं मालूम।"

युवक—"आखिर चली कहाँ गई?"

बनियां—"जहां से आई वहाँ चली गई होगी। यात्रा करने आई। कुछ दिनों मेरे यहाँ ठहरी। कल प्रातः काल हिसाब चुकता किया और चलदी।"

युवक—"यह नहीं कह गई कि किधर जारही है।"

बनियाँ—"न मैंने पूछा, न उसने कहा। यात्री आते हैं ठहरते हैं, चले जाते हैं। मैं तीर्थ का पंडा तो नहीं हूं जो उनका नाम पता लिखा करूँ। फिर यह तो साधुवी थी। रमता जोगी, वहता जल, इनका ठिकाना कहां। आज यहां कल वहां। बाई निस्संदेह बड़ी अच्छी थी। सब उसकी प्रशंसा करते हैं।"

युवक—"प्रशंसा के योग्य थी।

बनियां—"तुम जानते होगे कि वह कौन है।"

युवक—मुझे भी उसकी जानकारी नहीं है। केवल इतना ख्याल है कि वह विधवा ब्राह्मणी थी।"

बनियाँ—"क्या तुमको किसी प्रकार का धोखा देगई?"

आज कल साधुओं के भेष में प्रायः धोखेबाज आदमी रहते हैं।

मैं तो उसे पवित्र आत्मा समझता था।"

युवक अचम्भे में आगया। थोड़ी देर तक उसने कोई उत्तर नहीं दिया। बनिये को सन्देह हुआ। स्वयं ही कहने लगा कि यदि तुमको किसी प्रकार का धोखा हुआ है तो अभी पुलिस को सूचना दे दो। आज स्टीमर राज महन्द्री पहुँचा होगा। वह हिरासत में लेली जायगी।

युवक फिर भी चुप रहा।

बनियाँ और आगे बढ़ा। 'तुमको सोच विचार किस बात का है! जो करना हो करो। फिर इसका भी अवसर न रहेगा।"

युवक—"इनमें से कोई बात नहीं है। उसे देखना चाहता था। पता मालूम होता तो खोज लगाता। उससे मिलता। नहीं मिलता तो खैर।"

बनियां—"तब ही तो मैं कहता था कि भक्तिनी बाई अच्छी स्त्री थी। तुम्हारे चुप रहने ने मुझे सन्देह में डाल दिया था अन्यथा मैं ऐसी बात कभी मुँह पर न लाता। जो मैंने कहा है ईश्वर क्षमा करे। अब गोदावरी में स्नान करूँगा। तब यह दूर होगा।"

युवक हँसा—"तुम भी कैसे पुराने विश्वासी आदमी हो। क्या इतना भी पता नहीं दे सकते कि वह किधर गई।"

बनियां—"जाने के केवल दो रास्ते हैं। यदि हैदराबाद की ओर गई है तो गोदावरी पार करके बुरगम पहाड़ होते हुए निजाम के राज्य में पहुँची होगी। इसका पता नाव वाले मल्लाहों से मिल जायगा, क्योंकि भद्राचल में केवल एक ही नाव वाले का ठेका है। यदि वह स्टीमर में राज महेन्द्री गई तो कठिनता से पता लगेगा।"

युवक—"क्या तुम इतना बता सकते हो कि वह कहां की रहने वाली थी?"

बनियां—"मुझे तनिक भी पता नहीं। लेकिन अनुमान कहता है कि वह जब मिलेगी, तीर्थ स्थानों ही में मिलेगी।"

युवक ने नाव वालों से मिल कर पूछा। केवल इतना मालूम हुआ कि वह नाव पर चढ़ कर पार गई है। वह बुरगम पहाड़ में आया, जहां निजाम की तहसीलदारी है। साथ ही पालूंचा के राजा की भी कचहरियां हैं। यह क्षेत्र तो पालूंचा के राजा का है समस्तान रियासत कहलाता है जो निजाम के आधीन है, राजा ने समस्तान को छोड़ रक्खा है। वह मद्रास में रहता है। राज्य का प्रबन्ध उसके कर्मचारियों के सुपुर्द है। बुर्गम पहाड़ बहुत छोटी बस्ती है। आबादी भी मामूली है। वहां कुछ पता नहीं चला। मोटर वालों से मिला। बुरगम पहाड़ से मलन्दू की ओर मोटर जाती है। मोटर वाले भी कुछ न बता सके। तब वह फिर भद्राचल आया। रात भर वहां रहा। प्रातःकाल होते ही निराश होकर अपने गांव की ओर चला गया।

पांचवां अध्याय

मोतीबाई

मरहटी लड़की का नाम मोती बाई था। जाति की ब्राह्मणी थी पूना की ओर की रहने वाली थी। मां बाप अच्छे थे। बचपन में विवाह हुआ। पति मर गया। उसने अपने पति का मुँह भी नहीं देखा था। लड़की रूपवती और उच्चकोटि की बुद्धिमान थी किन्तु भाग्य अच्छा नहीं था। माता पिता उसके दसवें वर्ष में प्राण त्याग गये। वह इनकी इकलौती सन्तान थी। वह जो कुछ सम्पत्ति छोड़ गये थे, रिश्तेदारों ने उसे नकद के रूप में बदल दिया और बैंक आफ बंगाल में जमा कर दिया जो अब इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया

कहलाता है। इस धन का उसे मासिक सूद मिलता रहा। व उसके पालन का साधन था। लड़की कठोर स्वभाव और नियम को बड़ी पाबन्द थी। कुदरत ने इस मामले में उसके साथ दया का व्यवहार किया था। माता-पिता के मरने के बाद वह अपने मामू के घर आकर रही। वहाँ वह पढ़ी। पंडिता रामाबाई ईसाइनी के मिशन की स्त्रियों से उसका परिचय होगया। उनसे इसने हिन्दुस्तानी भाषा सीखी और ईसाई धर्म की जानकारी प्राप्त की। मामा माई ने उसे बेलगाम छोड़ दिया था। यदि वह ईसाई हो जाती तो यह विरोध न करते। साधारणतया अनाथ और विधवाओं के साथ हिन्दुओं का यही व्यवहार है। वैसे तो वह छुआछात जाति पांति के बड़े कट्टर होते हैं लेकिन अनाथ सम्बन्धियों को हिन्दूपना रखने के लिये उनके हृदय में लेशमात्र भी सहानुभूति नहीं होती। यह दशा आज की नहीं है किन्तु सैकड़ों वर्षों से है। हिन्दू जाति का हाल इस समय ऐसा भयानक होगया है कि प्रति वर्ष हजारों आदमी धर्म परिवर्तन करते चले जारहे हैं। हिन्दुओं की संस्था घटती जा रही है और यह इधर ध्यान भी नहीं देते। मोतीबाई स्वतः ही स्वतंन्त्र थी। मामा मामी की बेपरवाही सोने पर सोहागे का काम देती थी। वह घर के बन्धन और सामाजिक पाबन्दियों से बिल्कुल स्वतन्त्र होगई। किन्तु यह प्रशंशा की बात है कि अल्पायु, अधिक कहने सुनने पर और स्वतन्त्र होते हुये भी उसने हिन्दू धर्म को नहीं छोड़ा।

पन्द्रहवें वर्ष की आयु में मामा मामी भी ताऊन के रोग में चल बसे। उनकी भी कोई संतान नहीं थी। इसलिये उनकी भी पूंजी उसे मिलगई और इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया में उसी के नाम से जमा करादी गई। जीवन की आवश्यकताओं की दृष्टि से वह आश्रित नहीं थी।

अन्य सम्बन्धियों ने चाहा कि वह उनके साथ रहे लेकिन इसका उत्तर स्पष्ट हुआ करता था—मैं दुर्भाग्नि हूँ। जिस घर में पैर

रखती हूं, उसी के आदमी चल बसते हैं इसलिये इसी में भलाई है कि मैं अलग थलग होकर दुनियां में रहूँ।"

उसी आयु में कुछ मरहटे स्त्री पुरुष काशी की यात्रा को जारहे थे। मोतीबाई ने बैंक के मैनेजर से प्रबन्ध करलिया कि सूद का रुपया मुझे यात्रा में जिस पते पर मैं मगाऊँ, मुझे मिलता रहे। मैनेजर ने इसे स्वीकार कर लिया। वह नासिक, उज्जैन, मथुरा बृन्दावन और इलाहाबाद होते हुए बनारस पहुँची। यहां वह किसी बूढ़े वेदान्ती सन्यासी की चेली बनगई। कुछ दिनों उसकी संगत और अध्ययन से लाभ उठा कर उसने दक्षिण लौटने का विचार किया। यह लगभग १९२३-४४ की घटना है, जब भद्राचल का साठवर्षीय मेला लगा हुआ था। यहाँ बनिये के मकान में वह कुछ दिनों ठहरी। इसी मैले के अवसर पर उस तेलंगी युवक से उसकी जान पहिचान होगई जिसका वर्णन पिछले अध्याय में आचुका है। दोनों में से एक को भी किसी का नाम व पता ज्ञात नहीं था। लड़की बेपरवाह और बेगरज थी। युवक स्वार्थी और चिन्तायुक्त था। स्वार्थी बावला हो जाता है। उसे नाम निशान के बारे में इतना ख्याल नहीं था जितना अपने स्वार्थ का ध्यान था। यह कारण है कि दोनों एक दूसरे से अपरिचित बने रहे। लड़की उससे अपनी जान छुड़ाना चाहती थी। यह यदि उसकी जान के पीछे नहीं पड़ा हुआ था तो उसके रूप को देखकर मोहित हो गया था। उसे आशा थी कि यह जाल में फंस जायगी। जाती कहां है! धीरे धीरे उसे अपने माया जाल में फंसाने की धुन में पड़ा हुआ था।

लड़की अवसर देखकर भाग निकली। इसको चोट लगी और यह भी उसकी खोज में लगा।

संयोग की बात! दुनियां मेल मिलाप के तमाशे का स्थान है। इसका निश्चय पूर्वक आज तक न कोई निर्णय कर सका और न कर सकता है। शायद कोई कर भी न सकेगा। लड़की की कई तेलंगी

स्त्रियों से मन्दिर में जाते आते समय जान पहिचान होगई थी। रामपुर गाँव की रहने वाली थीं, जो गोदावरी जिले में था। सजातीय की सहानुभूति ईश्वरीय देन है विशेष कर जब स्त्रियां देखती हैं कि उनकी जाति की कोई अकेली पुरुषों की अपेक्षा बढ़ी चढ़ी दिखाई पड़ती है तो स्वाभाविक रूप से उसकी ओर प्रेम से झुक-जाती हैं। लेकिन इसका अर्थ भूले से यह नहीं समझना चाहिये कि स्त्रियां स्त्रियों के प्रत्यक्ष गुणों पर मोहित होती हैं। नहीं, स्त्री के स्वभाव में यह गुण नहीं है। एक स्त्री का दूसरी स्त्री की ओर रुझान इस रूप में कभी नहीं होता। आज तक कोई स्त्री किसी स्त्री पर मोहित नहीं हुई। इनमें परस्पर दोष निकालना, ऐब देखना स्वाभाविक है। हां जिस समय कोई स्त्री पुरुष की अपेक्षा बढ़ी चढ़ी होती है और उसके पराजित करने में सफल हो जाती है तो स्त्रियाँ उसे अपने आकर्षण का केन्द्र बनालेती हैं। वह भी थोड़ी ! अधिकता के साथ नहीं ! भक्ति और प्रेम में स्त्री प्रायः लालायत रहती है कि कोई उनका सजातीय पुरुषों से बढ़ कर हो जाय। यदि ऐसी कोई स्त्री दिखाई पड़ती है तो वह उसकी ओर झुकने लगती हैं। और यह भी किसी के साथ ! मोतीबाई में इन तेलंगी स्त्रियों ने दृढ़ता और धैर्य देखा। उसमें इस प्रकार के विशेष लक्षण थे जो उनकी निगाह में खुब गये। उन्होंने उससे कहा कि क्या अच्छी बात हो कि तुम कुछ दिनों के लिये हमारे गाँव में आकर हम को उपदेश दो ताकि हमारे जीवन का सुधार हो जाय। मोती बाई ने स्वीकृति प्रगट की। गांव का पता पूछ लिया। मेला कम हुआ और घट गया। उसे रामपुर जाने की सूझी। इसके अतिरिक्त तेलंगी युवक की छेड़ छाड़ से कुछ तंग भी आगई थी वरन् भद्राचल में कुछ दिनों और भी ठहरती। अवसर देखकर बिना किसी से पूछे गछे वह इन स्त्रियों के पते के अनुसार उन के गाँव रामपुर में चली आई। इन स्त्रियों ने उसका बड़ा आदर सम्मान किया। एक बिशेष मकान

उसके रहने के लिये खाली कर दिया। खाने पीने और आराम का सामान खुले हृदय से पहुँचा दिया। मोतीबाई स्वभाव की सीधी सादी थी। दिखावे की आदत उसे छू नहीं गई थी। उसने अस्थाई रूप से रामपुर के निवास को अच्छा समझा और पूरे एक महिना वहाँ ठहर कर स्त्रियों को धर्म कर्म की बातें समझाने लगी।

इस गांव में ठहरने के समय में उसके व्यस्त रहने का समय नियमानुसार भी सीधा सादा था। सुबह हुई, वह न्हाई धोई। कुछ देर तक एकान्त की पूजा में लगी। उससे निवृत होने पर गांव की स्त्रियों का आना शुरू हुआ। वह तेलंगी भाषा की प्रसिद्ध पुस्तक 'भक्त विजे' नामी लै बैठी। उसकी कथायें सुनाईं। स्त्रियों के चित्त पर पवित्रता का प्रभाव डाला। यह 'भक्त विजे' वास्तव में थोड़ी बहुत घटा बढ़ी के साथ नाभा जी की प्रसिद्ध पुस्तक 'भक्त माल' का अनुवाद है जिसका रिवाज उत्तर प्रदेश में बहुत अधिक था। अब कम होगया है। स्त्रियों को कथा वार्ता सुनने में दिलचस्पी रहती है। इसलिये कुल गाँव की स्त्रियां छोटी बड़ी सब उसके पास आजाया करती थीं और उसके उपदेश से लाभ उठाया करती थीं। यह उसका सुबह के समय का कार्य था। दोपहर बाद अकेली घर में रहती थी। पुरुष तो कोई उसके पास आने नहीं पाता था। इनकी मनाई थी। स्त्रियाँ आजाया करती थीं। शाम के समय दीपक जलने पर वह तेलंगी रामायण सुनाया करती थी। स्त्रियाँ शौक के साथ उसे सुना करती थी। यह कार्य दो घंटे रात तक चालू रहता था। फिर रातभरके लिये द्वार बन्द हो जाता था। सिवाय सुबह के नहीं खुलता था।

मानव जीवन का लावण्य काम काज में लगे रहना है। फिर उसे किसी प्रकार की शिकायत नहीं रहती और दिन हंसी खुशी से कट जाते हैं।

पूरा महीना इसी तरह से बीत गया। दिन और रात कैसे बीते इसका किसी को पता नहीं लगा। खुशी के दिन व्यतीत होते देर नहीं

लगी। दुख के दिन रात दोनों पहाड़ मालूम होने लगते हैं और कटने में नहीं आते। मोती बाई खुश थी। उसकी संगत से रामपुर की स्त्रियां भी बड़ी प्रसन्न थीं। लेकिन द्वन्द का जगत है। यहाँ सुख के साथ दुख, अमृत के साथ विष और आराम के साथ बेचेनी का जोड़ लगा रहता है। एक दिन स्त्रियाँ जैसी कि साधारण बात भी कथा सुनने आई लेकिन होश उड़े हुये थे।

मोती बाई ने पूछा—"आज तुम लोग उदास क्यों हो ?"

स्त्रियों ने उत्तर दिया—"अब तक हम स्वर्ग में थीं। अब नर्क में पड़गईं।"

मोती बाई—"यह क्या बात है ? मैंने नहीं समझा।"

स्त्रियाँ—तुम्हारी संगत हमारे लिये स्वर्ग थी। नारकीय आदमी आगया और सारा गांव नर्क के रूप में बदल गया। और हम बेचैन हो गये।"

मोती बाई—"मैं फिर भी नहीं समझी।"

स्त्रियाँ—"माई ! तू स्वर्ग की देवी है। हमारा गांव नर्क था। तू ने आकर स्वर्ग बना दिया था। हम अपने दुखों को भूल गईं थीं। अब वह व्यक्ति जिसने इस गाँव को नर्क बना रक्खा था, आगया है। एक महीने से वह नहीं था। सब खुश थे। उसके आने से सब दुखी हैं।"

मोती बाई—"यह ठीक है। अच्छी संगत स्वर्ग है और कुसंगत नर्क है। ईश्वर चाहे, बुरी से बुरी स्थिति में रक्खे लेकिन कुसंगत से बचा रक्खे। कुसंग हजारों नर्कों के दुख से अधिक भयदायक है। यहां तक तो मैं समझ गई और तुम्हारे विचार से सहमत हूँ लेकिन अभी तक मुझे असल हाल नहीं मालूम हुआ।"

स्त्रियां—"मालिक करे तुम्हारी उसे सूचना भी न हो वर्ना हमारी तरह तुम भी कष्ट में पड़ जाओगी।"

मोती बाई—"तुम स्पष्ट क्यों नहीं कहती हो।"

स्त्रियां—अफ़सोस ! क्या कहें !"

वह दर्द है कि जिस की दवा का नहीं पता।
वह दुख है जिससे सब को बचाये यहां खुदा ॥

मोती बाई—"अच्छा ! फिर सुनूंगी । अब जाओ । घर का काम धंधा करो । मैं भी रोटी पानी में लगूंगी ।"

छटवाँ अध्याय
क्रिस्टिया राव

क्रिस्टिया राव रामपुर का पटेल था। साथ ही उस गांव का पटवारी भी था। युवा, सुन्दर, जुबान का लस्सान, मीठी बोली ! जिस समय बात करता था, मुंह से फूल झड़ते हुये मालुम होते थे। आखों में चुम्बकीय आकर्षण था। माथा चौड़ा ! जिसने देखा वह उसकी ओर खिच गया। कहते हैं कि इसका कुटुम्ब कई सौ वर्ष से रामपुर में आकर बसा था। पटेल और पटवारी की सेवा शाही समय से उस की मौरूसी थी। पढ़ा लिखा मिलनसार ! सरकार दरबार में उसका मान था। क्या अच्छा होता कि जिस तरह कुदरत ने उसे बाहरी रूप और शिष्ठाचार प्रदान किया था, उसी तरह यदि उसे अन्तरीय रूप भी थोड़ा मिला होता तो यह व्यक्ति भूलोक के देवता की पदवी पाता। इस गुण से वह बंचित था। उदार अवश्य था मगर इसकी उदारता स्वार्थमय थी। यह अपने परिवार में अकेला रह गया था। सब सम्बन्धी और बाप चचा सब के सब ताउन के रोग के शिकार हो चुके थे। कोई स्त्री भी घर में जीवित नहीं बची

थी। यह शामलात परिवार की सम्पति का एक मात्र उत्तराधिकारी था। बचपन में मा बाप ने अपने जीवन में उसका विवाह कर दिया था लेकिन वह उसी आयु में चल बसी। फिर विवाह की नौबत नहीं आई। इसका कारण यह नहीं था कि कोई व्यक्ति लड़की देना नहीं चाहता था। बात यह थी कि उस के मिजाज में बदमाशों की संगत के कारण विशेष प्रकार की घृणित स्वतंत्रता आगई थी। वह जान बूझकर स्त्री के बंधन से स्वतंत्र रहने का इच्छुक था।

प्राय: वह रामपुर से महिनों बाहर रहता था। वह क्यों गाँव से कभी कभी अलग रहता था? इसका कारण गाँव वालों में से किसी को भी मालूम नहीं था। न कोई व्यक्ति विश्वास के साथ यह कह सकता था कि वह अपने पद का काम औरों को देकर किस प्रयोजन से बाहर चला जाया करता था। उसके कई साथी थे। रामू राव, श्याम राव, नरसिंधेलू, रंग राव आदि उनमें मुख्य थे और उसके विश्वास पात्र समझे जाते थे किन्तु यह कुछ ऐसी गंभीर वृति के थे कि किसी ने भूले से भी उनसे यह नहीं सुना कि क्रिस्टिया राव किस धुन में रहता है।

लेकिन रामपुर वाले उससे उसी तरह डरते थे जैसे गाय स्वाभाविक रूप से कसाई की सूरत और उसकी नीयत को भांप कर डर जाती है और हाथ पांव ऐसे फूल जाते हैं कि वह डर कर उससे भागने का भी नाम नहीं लेती। लेकिन सब को इस बात का विश्वास था कि यह सोने का घड़ा है जिसमें विषैला जल भरा हुआ है। चाहे उसका शरीर तो देवताओं का है लेकिन शरीर में रहने वाली आत्मा शैतान है।

एक महीना हुआ। अन्तिम कुंभ के मेले में यह अकेले भद्राचल चला गया था। वहाँ से यह फिर किधर चला गया, इसकी जानकारी किसी को भी नहीं थी। सब हृदय से प्रार्थना करते थे कि वह दूर रहे, तब ही ख़ैरियत है। अत्याचारी का सोते रहना उसके

जागने से हजारों गुना अच्छा है क्योंकि जब तक जागता रहेगा, अत्याचार ढ़ाता रहेगा। यदि सो जायगा तो उसके अत्याचारों से छुटकारा हो जायगा लेकिन वह एक महीने बाद आगया। कुल गांव में उसके आने का समाचार आग की तरह फैल गया जो क्षणमात्र में फूल से हृदय को लाकर भस्म कर दे।

यह भी कुदरत का रहस्य है कि एक अकेला प्राणधारी किस तरह हजारों पर हावी हो कर उन्हें सौ सौ तरह के नाच नचाया करता है। और उनसे कुछ करते धरते नहीं बनता। दुनियां में अत्याचारी थोड़े हैं। पीड़ितों की संख्या बेशक अधिक होती है। भयानक पशु यदि बच्चे भी बहुत से दें तब भी उनकी संख्या अधिक नहीं होती। निर्दोष जीव यदि एक बच्चा भी जने तो वह अधिक हो जाते हैं। शेर और चीते अधिकता से किसी जंगल में भी नहीं रहते। लेकिन गाय, बैल, भैंस और भेड़ बकरी के गल्ले के गल्ले दिखाई पड़ते हैं। इसका कारण क्या है? यह एक गुत्थी है जो बुद्धिमानों के हल करने के लिये छोड़ दी गई है।

घरों में क्रिस्टिया राव का चर्चा होने लगा। सब भयभीत होगये। अपने अपने देवनाओं से उससे बचने और उसके अत्याचार से छुटकारा पाने की प्रार्थना करने लगे। मुंह किसी का नहीं खुलता था। सब अपने २ चित्त में भयभीत थे।

मोती बाई के प्रश्नों का उत्तर एक स्त्री ने भी स्पष्ट शब्दों में नहीं दिया। न किसी ने उस का नाम बताया। भय था कि कहीं कोंई उससे जाकर न कहदे और लेने के देने पड़ें।

मोती बाई समझदार थी। उसने फिर स्त्रियों से इस विषय पर अधिक प्रश्न नहीं किये।

एकान्त अच्छा है। एकान्तवासी के बारे में साधारणतया कहा जाता है कि उसे आपत्तियों का भय नहीं रहता। लेकिन मोती बाई को हम एकान्तवासी भी नहीं कह सकते। सुबस शाम वह गाँव की

स्त्रियों के जमघट से घिरी रहती थी। अब यह दशा होगई कि कुमारी लड़कियों और व्याही स्त्रियों का आना जाना एक दम बंद होने लगा। केवल बूढ़ी स्त्रियां आने जाने लगीं। कुछ दिनों बाद इस में भी कमी आगई। मनुष्य स्वाभाविक रूप से सामाजिक जीव है। जब उन्होंने भी धीरे धीरे आना जाना बन्द करदिया तो इसके आश्चर्य की सीमा न रही। दक्षिण की हिन्दू स्त्रियां पर्दा नहीं करती और न इनमें हिन्दुस्तानियों की तरह पर्दे का रिवाज है। गरीब स्त्रियां तो बाहर निकलने के लिये मजबूर थीं।

ब्राह्मणियों ने पर्दा करना शुरू कर दिया। इसका जी उकताने लगा। मन में सोचने लगी कि शायद यहां से कूच करने का समय आगया। हमारा अस्तित्व सृष्टि में किसी विशेष आवश्यकता के कारण है, हम यहां योंही नहीं आये। कोई ईश्वरीय आवश्यकता हमको यहां लाई है। जब तक इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो जाती तब तक हम को विवश होकर रहना पड़ता है। जब आवश्यकता दूर हो जाती है फिर हम एक क्षण के लिये भी नहीं ठहर सकते। किसी ने सच कहा है:—

अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले।
लाई हयात आये कजा ले चली चले॥

मोती बाई इसी सोच विचार में थी कि जो स्त्रियाँ उसकी संगत में आती जाती थी वह अपने बदले में अपने पतियों और पुरुष सम्बन्धियों को उसकी सेवा और आराम के ख्याल से उसके पास भेजने लगी। गांव वाले पुरुष मोती बाई के अहसान से अनभिज्ञ नहीं थे उसने एक ही महीने में उनकी स्त्रियों के शिष्टाचार और आचरण में बड़ा परिवर्तन कर दिया था। सब उसके लाभ को मानते थे। इन्होंने आकर प्रार्थना की— "माई! हम तेरी सेवा के लिये हाजिर हैं। हमारे घरों की स्त्रियों ने हम को इस काम के लिये भेजा है। पहिले इस कारण नहीं आते थे कि तुझे पुरुषों के

आने जाने से घृणा थी ।"

मोतीबाई—"यह तो सच है । मैं पुरुषों को अपने पास नहीं आने देती थी । लेकिन इसका क्या कारण है कि स्त्रियों ने एक दम आना जाना बन्द कर दिया है ।"

पुरुष—"यह रुकावट अस्थाई है ।"

मोतीबाई—"कारण ?"

पुरुषों को उत्तर देने में झिझक हुई और वह चुप होगये ।

मोती बाई ने सोचा कि कोई न कोई विशेष कारण है । कारण का संकेत तो उनको संगत में आने वाली स्त्रियाँ कर गईं थीं किन्तु कोई बात स्पष्ट नहीं कही गई थी । वह भी चुप रही और इनका मुँह देखने लगी ।

पुरुषों ने कहा—' माई ! हम बुरे लोग नहीं हैं । यदि तू आज्ञा दे तो जिस तरह हमारी स्त्रियाँ तेरी संगत से एक महीने में बदल गईं, हम भी प्रतिदिन आकर 'भक्त विजे' और रामायण की कथा का लाभ उठाया करें ।"

मोतीबाई—"यदि तुमको अवकाश हो तो सुबह के आठ बजे मेरा द्वार खुला रहेगा, उस समय तुम आओ और साढ़े नौ बजे चले जाओ । मुझे कोई आपत्ति न होगी ।"

पुरुष—"हम विशेष कृपा के लिये तेरे कृतज्ञ हैं ।"

मोती बाई—"लेकिन तुमने यह नहीं बताया कि स्त्रियाँ मुझसे क्यों घृणा करने लगीं ।"

पुरुष—"उन्हें तुझसे घृणा नहीं है । वे और हमारा कुल गांव तेरा कृतज्ञ है । यहां न आने का कोई विशेष कारण है ।"

मोतीबाई—' उसी कारण को तो मैं जानना चाहती हूँ ।"

पुरुष—"पुरुष ! हम मन में बड़े लज्जित हैं । स्वयं कुछ न कहेंगे समय पर तू आप जान जायगी ।"

किस्सा कोता ! मोती बाई ने रामपुर से कूच करने का विचा बदल दिया। पहिले की तरह उसने फिर अपनी कथा का सिल-सिला चालू किया। गांव में अधिकतर ब्राह्मण, कुमटी, कुम्बी आदि रहते थे। यह भली जातियाँ हैं। इनकी स्त्रियों का आना तो एक दम बन्द होगया। शूद्र स्त्रियों को भक्ति भाव की ओर कम लगाव होता है। इसलिये मोती बाई की संगत में हर जाति के केवल पुरुष आने लगे और उसकी कथा की धूम मच गई। स्त्री बड़ी वक्ता, पंडिता और और साधुओं की संगत में रह चुकी थी। जब बोलती थी तो यह ज्ञात होता था कि सरस्वती जिम्या पर बैठी हुई है।

दिन आये और गये। पन्द्रहवें दिन तबकम्मा के बहाने का त्यौहार आगया। हमारे देश में दशहरा के दिन में रामलीला मनाई जाती है। बंगाल में काली या धात्री देवी की पूजा की जाती है। दक्षिण में बिशेषरूप से मद्रास प्रान्त में तबकम्मा बहाने के उत्सव का रिवाज है। स्त्रियां कागज का गोला बनाती हैं। उसे फूलों से सजाती हैं और सब मिलजुल कर गाती बजाती हुई नदी, तालाब या नहर नाले में उन्हें ले जाकर बहाती हैं। पुरुष स्त्री सब के सब मेले में जाते हैं।

तबकम्मा बहाने के दिन रामपुर की शरीफ स्त्रियां भेंट लेकर मोती बाई की सेवा में आईं और तबकम्मा देखने का निमंत्रण दिया। बेचारी महीने डेढ़ महीने से घर से बाहर नहीं निकली थी उनकी प्रार्थना स्वीकार करली और उनके साथ गोदावरी नदी के किनारे तमाशा देखने आई।

हजारों आदमियों की भीड़ लगी थी। मोती बाई यद्यपि बाहर नहीं निकलती थी लेकिन बहुत आदमी स्त्री और पुरुष जो कथा में आते जाते थे पहिचानते थे। नाम तो सब सुन चुके थे। कथा में आने वाले स्त्री पुरुष सम्मान के लिये उनके पांव पर गिरे और वह स्वयं तमाशा बन गई।

इन दर्शकों की भीड़ में वह व्यक्ति भी था जिसका नाम हमने क्रिस्टिया राव बनाया है। उसने स्त्री पुरुषों की बड़ी संख्या को मोती बाई के पाँव पड़ते देखा। उसे आश्चर्य प्रतीत हुआ, क्योंकि दक्षिण में इस प्रकार का दृश्य और किसी स्त्री की इस तरह आम जमघट में पूजा का दृश्य बहुत कम देखने में आता है। वह भी उधर आया। ध्यान से उसकी सूरत देखी। मुँह से निकल गया—'आप यहां कहां?' मोती बाई की दृष्टि उस पर गई। वह भी बोल उठी—'दाना पानी खेंच लाया।''

फिर तो दोनों उसी दिन से एक दूसरे के नाम से परिचित हो गये। यह क्रिस्टियाराव वही युवक था जो भद्राचल में उस मरहटी लड़की के पीछे पड़ा था।

———

सातवाँ अध्याय

पूछ ताछ और परिणाम

बवकम्मा का त्यौहार आया और गया। उसके तीसरे दिन राम-पुर में जिले के हाकिम के आने की सूचना मिली। जिले का हाकिम गांव में कभी नहीं जाता। जब कभी उसका दौरा होता है पुलिस के अफसर और तहसीलदार पहिले ही से रसद का प्रबन्ध करते हैं और सबको उसके आने की सूचना रहती है। सब लोग बड़े ठाठ और आदर से उसका स्वागत करते हैं। लेकिन रामपुर में इसके आने की विचित्र दशा हुई। सुबह सूचना मिली। और दो घण्टे बाद वह स्वयं गांव में आगया। केवल थोड़े से आदमी साथ थे। वह

मुसलमान था। उसका शरफुद्दीन नाम था। आते ही उसने गांव के बाहर आम के बाग में अपना डेरा लगाया। क्रिस्टियाराव पटवारी और पटेल दोनों था। उसका कर्त्तव्य था कि वह ऐसे अवसर पर उपस्थित रहे। और कम से कम रसद पहुँचाने और आराम का प्रबन्ध उसके सुपुर्द हो। वह सुनते ही सिरके बल दौड़ता हुआ आया। सलाम किया। डाली दी लेकिन शरफुद्दीन ने उसकी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। बेपरवाई प्रगट करते हुये उससे कहा—"मुझे केवल आज और कल ठहरने की आज्ञा है। मैं किसी विशेष काम से आया हूं। मेरे निजी आराम का कुल सामान साथ है। तुम इतना कर सकते हो कि मेरे आदमियों को बनियों की दुकान दिखादो। वह अपने लिये आवश्यक सामान मोल लेआयें।"

रामपुर में प्रथम तो हाकिमों के दौरा ही नहीं हुआ करते थे। क्रिस्टिया राव गांव का पटेल और पटवारी था। आज तक किसी हाकिम ने उसके साथ ऐसा वर्ताव नहीं किया था। जो हाकिम या अफसर उसके गांव में आते थे, सबके सब उसके महमान होते थे। उसकी आदत थी कि गांव वालों से चन्दा इकट्ठा करके सबकी मुट्ठी गरम कर दिया करता था। यह न केवल उससे खुश जाते थे किन्तु जो कुछ कहता था, मान जाते थे और उसीके कहने के अनुसार सब कुछ हो जाता था। शरफुद्दीन का वर्ताव उसके लिये नई बात थी। उसे खटका तो हुआ कि हाकिम जिला का यकायक और बिना सूचना के आना, उसकी सेवा को अस्वीकार करना किसी न किसी विशेष कारण से है लेकिन वह निडर था। मन में हँसा और जो कुछ हुक्म हुआ था उसका पालन कर दिया।

हाकिमों का नियम है कि वह गाँव के पटेल पटवारी के द्वारा सारा काम कराते हैं। इसने पुलिस के द्वारा रामपुर के निवासियों को बुलाकर डेरे के बाहर बैठाया और हर एक का एक एक करके बुलवा कर पूछ ताछ शुरू की।

"क्या तुमको क्रिस्टिया राव के खिलाफ शिकायत है ?"

"नहीं हमको कोई शिकायत नहीं है।"

"फिर यह शिकायत क्यों की जारही है। बार बार शिकायत की दरख्वास्तें सरकार में पहुँची। मैं इस अवसर पर इसी काम के लिये भेजा गया हूँ।"

"अच्छा होता कि आप शिकायत करने वालों को बुला कर उनसे सीधे पूछते।"

"लेकिन दरख्वास्त में नाम नहीं दिये गये हैं। गुम नाम पत्र हैं जो सरकार के नाम भेजे गये हैं। तुम केवल इतना करो कि हालात की मुझे सूचना दो।"

"हमको जो कुछ कहना था कहदिया। हम यह भी नहीं जानते कि शिकायत किन बातों के बारे में है।"

"सुनो ! हम तुम को आखिरी अर्जी अक्षरसः सुना देते हैं।"

दरख्वास्त का मजमूनः—

सरकार दौलत मदार !

हम रामपुर निवासी, ताल्लुका गोदावरी जिला गोदावरी की जान व माल, इज्जत आबरू न केवल खतरे में है किन्तु खुल्लम खुल्ला जान जा रही है। माल पर जबरदस्ती हमले हुआ करते हैं। इज्जत गई और जाती भी है। गाँव वासी युवक से तंग आगये हैं। कुछ करते धरते नहीं बनता। अफसोस है कि सरकार की प्रजा पर दिन दहाड़े यह अत्याचार हो और सरकार को उसकी सूचना तक न हो। यह दशा कब तक रहेगी, इसका ज्ञान केवल ईश्वर को होसकता है। प्रजा की समृद्धि राज्य की शक्ति समझी जाती है। प्रजा की जड़ कट रही है। सरकार को इन बुराइयों की जानकारी न हो लेकिन प्रजा की परवाह का होना आवश्यक है। न कहीं दाद है न फिराद है। हम जुबान तक नहीं खोल सकते हैं। जबान पर खामोशी की मुहर लगादी गई है।

इसलिये हमें बोलने का साहस भी नहीं होता। अब जबकि देखा है कि गांव के गाँव पर एक आपत्ति आगई है, जान माल इज्जत आबरू के लाले पड़े हैं और बेबसी ने चारों ओर से दबोच लिया है तो कौन व्यक्ति साहस करके अत्याचारी को बदला दे और इस तरह की कारवाई करने में सरकारी कानून के अन्तरगत कहने सुनने में मुलजिम माने जाने का भय है।

इस अत्याचार की जड़ में केवल एक आदमी का हाथ है। एक मछली ने कुल तालाब को गंदा कर रक्खा है और एक निहारी गाय ने कुल गल्ले (समूह) को हैरान और परेशान कर रक्खा है। दस बीस सौ पचास आदमी नहीं हैं एक व्यक्ति है जिस के हाथ में सरकार के अधिकार मेल जोल और हकूमत की बागडोर है। वह जो चाहता है करता है। किसी की ओर से पूछताछ नहीं है कि ऐसा अंधेर क्यों होरहा है।

सरकार के विरुद्ध हमें कोई शिकायत नहीं है। वह हमारी रक्षक है। सूर्य की गर्मी सही जाती है लेकिन सूर्य की गर्मी से तपे हुये पाँव के नीचे के रेत असह्य होते हैं। इस व्यक्ति ने सरकार से प्रार्थना करके यह अधिकार लिया और यह अधिकार अत्याचार के रूप में बदल रहा है।

यह अत्याचारी व्यक्ति क्रिस्टियाराव रामपुर का पटेल और पटवारी है जो सरकारी हाकिमों और पुलिस की नाक का बाल बना हुआ है। इसने हमारे माल से पुलिस के मुंह बन्द कर रक्खे हैं। हमारे चारों ओर निराश रूपी अंधकार छाया हुआ है

इससे अधिक कहने की शक्ति नहीं है।

विनीत

रामपुर निवासी

दरख्वास्त स्वयं हाकिम जिला ने पढ़ कर सुनाई। उसने कई आदमियों को अलग अलग सुनाई। सबने विचार किया। चुपचाप

और सोच विचार के साथ सुना। सब चुप होगये।

हाकिम जिला ने पूछा—"इस पर तुम क्या कहते ?"

रामपुर निवासी—"हमारा जो उत्तर पहिले था वही अब भी है।"

हाकिम जिला—बड़ा खेद है। तुम लोगों ने शिकायत की और मैं इसी आधार पर जांच करने को भेजा गया। मैंने जान बूझकर तहसीलदार या पुलिस पर भरोसा नहीं किया। मैं स्वयं जांच करने आया हूँ और तुम लोग जुबान तक नहीं हिलाते। फिर इन्साफ किस तरह किया जाय।

रामपुर निवासी फिर भी गूंगे बहिरे बने रहे।

हाकिम जिला ने कहा—"दरख्वास्त उर्दू भाषा में लिखी हुई है। मैंने तुमको तेलंगी में उसका अनुवाद सुनाया है। यह किसी योग्य और भाषा जानने वाले की लिखी हुई है। क्या तुम इतना बता सकते हो कि तुम्हारे गांव में उर्दू कौन जानता है।"

गाँव वासियों ने उत्तर दिया—"रामपुर में क्रिस्टिया राव उर्दू जानता है जो इस शिकायत का आधार है। उसके सिवाय चार आदमी और उस मुसलमानी भाषा को जानते है रामलू, श्यामू, नरसिंघू और रंगू।"

हाकिम जिले ने कहा—"अच्छा तुम जाओ। गाँव में किसी को मालूम न होने पावे कि मैं क्रिस्टिया राव के विरुद्ध जाँच करने आया हूँ। मैं इस भेद को किसी पर प्रगट न करूंगा। मैं इस मामले की जांच स्वयं करूंगा। यदि आवश्यकता हुई तो तुम्हें बुलवा भेजूंगा।"

जाँच का कोई परिणाम नहीं हुआ। सब अपने अपने घर गये। प्रश्नोत्तर में रात के ९ बज गये। खाना खाया और सोरहे। क्रिस्टिया राव डेरे में बराबर हाजिर था। वह इजलास में नहीं बुलाया गया। लेकिन अपना कर्तव्य समझ कर हाकिम जिले के

आदमियों की सेवा में लगा रहा । उसे मालुम होगया कि दाल कुछ काला अवश्य है । उसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह था कि उसे हाकिम जिला ने अपने पास आने की इजाजत नहीं दी । चोर की दाड़ी में तिनका ।

आठवां अध्याय

अधिक पूछगछ और परिणाम (लगातार)

सुबह हुई । हाकिम जिला उठा । शौचादि और चाय पानी से निवृत होकर उसने रामलू, श्यामू, नरसिंघेलू और रंग राव को बुलाया । यह उस गांव के जमीदार थे । सब युवा थे । यह डेरे में मौजूद थे । बुलाये जाने पर एक एक करके हाजिर किये गये, क्योंकि मियाँ शरफुद्दीन को इसी तरह की जांच से परिणाम पर पहुँचने की आशा थी । सबसे पहिले रामलू आया । उसने आते ही तीन बार झुक कर सलाम किया ।

हाकिम जिला ने उससे प्रश्न किया—"तुम्हारा नाम रामलू है ?"

रामलू—"हां सरकार ! रामलू कहलाता हूँ ।"

हाकिम—"तुस गांव में कबसे रहते हो ।"

रामलू—"यहाँ ही पैदा हुआ, यहाँ ही पालन पोषण हुआ और यहाँ हमेशा से रहन सहन है । मैं यहाँ का पंच हूँ ।"

हाकिम—"तुम उर्दू जानते हो ? ।"

रामलू—"इस भाषा को जानता हूँ ।"

हाकिम—"तुमने उर्दू कहाँ पढ़ी थी ?।"

रामलू—"सरकारी स्कूल में ?।"

हाकिम—"क्या तुम्हारे अतिरिक्त और लोग भी उर्दू जानते हैं।"

रामलू—"केवल पांच आदमी यह मुसलमानी भाषा जानते हैं। और सब तेलंगी में बात चीत करते हैं।"

हाकिम—"उर्दू मुसलमानी भाषा तो नहीं है। इसे तुम हिंदुस्तानी भाषा कहो।"

रामलू—"चूंकि यहां यह जबान केवल मुसलमान बोलते हैं, हिन्दूओ में बिल्कुल प्रचिलित नहीं है, इसलिये मुसलमानी बोली समझी जाती है। कोई कोई इसे तुर्की भी कहते हैं। यह गलत हो लेकिन सब लोगों में ठीक मानी जाने का विषय है वरन् मैं यह जानता हूँ कि यह हिन्दुस्तान की भाषा है। हिन्दू मुसल मान सब ही इसे बोलते हैं। यह शाहजहां बादशाह के समय में चालू हुई थी। उसकी फौज में अरबी, ईरानी, तुर्की, मुगल सब तरह के सिपाही थे। वह हिन्दी बोलते थे। लेकिन साथ ही अपने देश की भाषा के शब्द भी शामिल कर देते थे। इसलिये इसका नाम उर्दू या लशकरी भाषा होगया। धीरे धीरे इसने हाथ पाँव बढ़ाये। अब यह अधिक निखार पर आगई है। भारत की बढ़ी चढ़ी भाषा समझती जाती है।"

हाकिम—तुम में हिन्दुस्तानियों के रंग ढंग हैं। जानकार आदमी मालुम होते हो। क्या तुम उर्दू लिख भी सकते हो। (उसने जेब से एक लिखा हुआ कागज निमूने के रूप में प्रस्तुत किया)

हाकिम—मेरे पास एक दरख्वास्त आई है। क्या तुम इसे देख कर कह सकोगे कि यह किस की लिखी हुई हैं। (हाकिम ने वह दरख्वास्त उसे दिखाई)

रामलू—"यह मेरी लिखी नहीं है। यह बहुत खुशखत है। भाष भी ठीक है। यह किसी योग्य मुंशी की लिखी हुई मालूम होती है।

हाकिम—"ऐसा अच्छा लिखने वाला कोई यहाँ है ?"

रामलू—"मैं नहीं जानता हूँ। मेरा विचार है कि इस ओर के किसी उर्दू जानने वाले के हाथ की लिखी हुई भी नहीं है। हो न हो, यह किसी हिन्दुस्तानी की लिखी हुई है। यहाँ ऐसे लिखने वाले कम हैं।"

हाकिम—"ठीक है। तुम यह कह सकते हो कि क्रिस्टियाराव किस तरह का आदमी है ?"

रामलू—"क्यों नहीं ! वह गाँव का मुखिया, पटेल पटवारी है। सबमें उसकी इज्जत है। सरकार दरबार में उसकी पूछ गछ होती है। वह बड़ा सरकारी खैरख्वाह है। जब सरकार को रुपये पैसे की आवश्यकता होती है वह दिल खोल कर स्वयं चन्दा देता है और दूसरों से दिलवाता है। सरकारी अस्पताल, लड़कियों के स्कूल और ताऊन के रिलीफ कार्यों में उसने बड़ी रकम चन्दे में दिलवाई थी।"

हाकिम—"यह सब ठीक है। हाकिम जिले को इसकी खैरख्वाही स्वीकार है। लेकिन तुम यह बताओ कि इसका चाल चलन रंग-ढंग कैसा है ?"

रामलू—बहुत अच्छा है। ईश्वर ने उसे अच्छी शकलसूरत दी है। जैसे उसकी सूरत अच्छी है वैसे ही वह शील स्वभाव का भी अच्छा है।"

हाकिम—"लेकिन इस दरख्वास्त में उसकी शिकायत कीगई है।"

रामलू को आश्चर्य हुआ। उसने दरख्वास्त को केवल सरकारी नजर से देखा था। दृष्टि केवल लिखावट पर थी। आश्चर्य को दबा कर उसने उत्तर दिया—'क्रिस्टियाराव बहुत अच्छा आदमी है।

यह किसी शत्रु की कार्यवाई होगी। हर जगह सबके मित्र शत्रु हुआ करते हैं।"

हाकिम—"तुमको उससे कोई शिकायत है ?"

रामलू—"नहीं, बिल्कुल नहीं।"

हाकिम—"अच्छा ! तुम जाओ। श्यामू को भेजो।"

श्यामू आया।

हाकिम ने पूछा—"क्रिस्टियाराव की सरकार में बहुत बड़ी शिकायत हुई है। तुम इसलिये बुलाये गये हो कि इस शिकायत के बारे में अपनी राय दो।"

श्यामू ने उत्तर दिया—"जब तक शिकायत का पता न हो मैं क्या कह सकता हूँ।"

हाकिम ने वह दरख्वास्त उसको दी। उसने शुरू से अन्त तक उसे पढ़ा। उसकी शकल बदलती गई। हाकिम की दृष्टि उसकी सूरत पर थी। पढ़ने के बाद श्यामू के मुँह पर हवाइयाँ झूमने लगीं। उसने सँभल कर कहा—'यह शिकायतें निराधार हैं।"

हाकिम—"क्या तुम विश्वास और धर्म ईमान से ऐसा कहते हो ?"

शामलू—"फिर मुझे इनका पता नहीं है।"

हाकिम—"जानकारी तो होनी चाहिये। तुम यहां के निवासी हो। यह मामूली दरख्वास्त नहीं है जो उसके किसी एक शत्रु ने लिखी होगी किन्तु सोच समझ कर लिखाई गई है।

शामलू—"मुझे इसकी जानकारी नहीं है।"

हाकिम—"तुम क्रिस्टियाराव के विरुद्ध कुछ न कहोगे ?"

शामलू—"मैं कुछ न कहूंगा।"

हाकिम—"क्यों ?"

शामलू—"मुझे पता नहीं है।"

वह भी चला गया। नरसिंघेलू बुलाया गया। उसने आते ही तीन बार झुक कर प्रणाम किया।

हाकिम—"तुम बता सकते हो क्रिस्टिया कैसा आदमी है ?"

नरसिंघेलू—"क्यों नहीं, वह मेरा साथी है। रात दिन साथ-साथ रहना। बहुत अच्छा आदमी है।"

हाकिम—"वह कहाँ रहता है ?"

नरसिंघेलू इस सवाल पर डर गया। वह यह न समझ सका कि उस प्रश्न के पर्दे में क्या रहस्य है। सँभल कर उत्तर दिया—"वह रामपुर में रहता है।"

हाकिम—"यह तो मैं जानता हूँ। इस महीने से पहिले वह कहां था ?"

नरसिंघेलू—"वह भद्राचल की यात्रा में गया था।"

हाकिम—"यात्रा में तो अधिक से अधिक सात दिन लगते हैं क्या यात्रा के बाद वह रामपुर लौट आया ?"

नरसिंघेलू—"नहीं। वह अन्य स्थानों की सैर करता रहा।"

हाकिम—"सैर करने का प्रयोजन क्या था ?"

नरसिंघेलू—"दिल बहलाव ! काम काज से जी उकता गया।"

हाकिम—'वह अक्सर बाहर आया जाया करता है।"

नरसिंत्रेलू—"कम, अधिक नहीं।"

हाकिम—"उसकी इस सैर में कब से कमी आगई ?"

नरसिंघेलू—"छः महीने वह बाहर नहीं गया। केवल यात्रा के कारण अबकी बार गया।"

हाकिम—"क्या तुम भी साथ थे ?"

नरसिंघेलू—"मैं भी साथ था।"

हाकिम—"और कौन-कौन साथ थे ?"

नरसिंघेलू—मैं और रामू, श्यामू, और रंगराव,"

हाकिम—"तुम पंज तन हो जो साथ रहते हो।"

नरसिंघेलू—"पेचताव में तो पड़ गया लेकिन स्वीकार किया कि हम पांचों प्रायः साथ रहते हैं।"

हाकिम—"क्या यह सच है कि क्रिस्टियाराव जबरदस्ती करता है और तुम उसके साथ शामिल रहते हो।"

नरसिघेलू —"नहीं यह बिलकुल गलत है।"

हाकिम ने उसे भी लौटा दिया। अब रंगराव की बारी आई। वह आया और आदरपूर्वक प्रणाम किया।

हाकिम ने पूछा—"क्या तुम क्रिस्टिया के मित्र हो ?"

रंग राव ने उत्तर दिया—"हाँ, मैं उसका साथी हुँ।"

हाकिम—"वह ब्याहा है या क्वारा है ?"

रंगराव—"उसका विवाह हुआ था। स्त्री मर गई। फिर बिवाह नहीं किया।"

हाकिम—"क्यों ?"

रंगराव—"विवाह में दिक्कतें होती हैं। लड़कियाँ हम लोगों में कठिनता से हाथ आती हैं। छोटी लड़की के साथ विवाह करना नहीं चाहता था।"

हाकिम—"उसके घर में स्त्रियां तो आती रहती हैं। उनमें से अधिकतर विधवा होती हैं। वह क्यों नहीं किसी विधवा के साथ विवाह कर लेता। यों स्त्रियों से घिरे रहने में बदनाम होने का भय रहता है।"

रंगराव—"हमारी जाति में विधवाओं के विवाह का रिवाज नहीं है। जाति से निकाले जाने का भय रहता है।"

हाकिम—"तुम उसके मित्र हो। क्यों नहीं सलाह देते कि वह शीघ्र विवाह करले ताकि बदनाम होने से बच जाय। तुमको ज्ञात होगा कि गांव में उस पर उंगली उठती है। लोग उसके जीवन और रंग ढंग की शिकायत करते हैं।"

रंगराव—"मैंने उसे राय दी है। उसके मामा की एक लड़की है किन्तु छोटी बहुत है। इसलिये सोच विचार है।

हाकिम—"क्या मामा की लड़की के साथ विवाह सम्भव है ? वह हिन्दुओं के दृष्टिकोण से बहिन होती है।"

रंग राव—"हमारे यहां मामा की लड़की के साथ विवाह उचित समझा जाता है बल्कि भाँजे का मामा की लड़की पर हक होता है। जब तक भांजा इंकार न करे, तब तक मामू अपनी लड़की किसी दूसरे को नहीं दे सकता। हां काशी, प्रयाग और हिन्दुस्तान, पंजाब आदि में ऐसा विवाह उचित नहीं समझा जाता।"

हाकिम—"मैं हिन्दुस्तानी मुसलतान हूँ। हमारे यहाँ तो मामू आदि की लड़कियों के साथ विवाह कर लेना धार्मिक रूप से उचित है। हिन्दू ऐसा नहीं करते। तुमने यह रिवाज मुसलमानों से लिया होगा।"

रंग राव—"यह रीति हमारे यहां सदा से प्रचिलित है। हिन्दुओं के रीतिरिवाज विचित्र तरह के हैं। कहीं कुछ कहीं कुछ। हिन्दुस्तान में लड़की व्याह होकर दुलहा के घर आती है। मद्रास में लड़का व्याहे जाने पर लड़की के बाप के घर में जाकर रहता है। हिन्दुस्तान में लड़के को पुरुषवत (male) संतान मौरूसी जायदाद पर काबिज होती है। मद्रास में लड़की की सन्तान को यह अधिकार प्राप्त होता है। मैसूर, ट्रावनकोर, कोचीन आदि रियासतों में भी ऐसा होता है। हिमालय की घाटी में एक पुरुष की दस दस स्त्रियां होतो हैं। तिब्बत में एक स्त्री के दस दस पति होते हैं।

अभिप्राय यह कि प्रत्येक देश में प्रत्येक रिवाज है। आपको सुन कर आश्चर्य होगा कि बजवाड़ा की ओर नाना अपनी धोवती से विवाह करने का इच्छुक रहता है और इसका हक है यद्यपि आमतौर पर इसका रिवाज नहीं है।"

हाकिम—"ईश्वर बचाये! जब लड़की की लड़की से विवाह उचित है फिर लड़की के साथ शादी में क्यों सोच विचार होता है। यह बुरी रिवाज है।"

रंग राव—"हिन्दुओं का अजीब धर्म कर्म है।"

हाकिम—"खैर! यह मैंने तुमसे सुन लिया कि क्रिस्टिया राव

PURNADAYAL

का घर पराई स्त्रियों के जमघट से बदनाम है। उसको मित्र की हैसियत में राय दे सकते हो। अब तुम उसके मामू को बुलाओ। मैं सीधे उससे पूछूं।"

रंग राव बाहर गया। क्रिस्टिया राव के मामा का नाम नेकटिया राव था। वह वहां नहीं था। गाँव ही में हाकिम का डेरा था। आदमी दौड़े गये। उसे बुला लाये। वह उपस्थित हुआ।

हाकिम—"तुम क्रिस्टया राव के मामा हो ?"

नेकटिया राव—"जी, सरकार।"

हाकिम—"देखो तुम्हारा भांजा बड़ा बदनाम होरहा है। तुम उसके चालचलन के जिम्मेदार हो।"

नेकटिया राव—"जब किसी का किसी पर बस न चले तो कोई क्या करे।"

हाकिम—"तुम अपनी लड़की उसे व्याह दो क्योंकि उसका तुम्हारी लड़की पर हक है। उसके यहां ईश्वर इच्छा से स्त्री कोई नहीं है। बदमाश स्त्रियों की संगत ने उसे बदनाम कर दिया है।'

नेकटिया राब—"ना हुजूर ना ! मैं अपनी लड़की उसे कभी न दूँगा।"

हाकिम—"क्यों ?"

नेकटिया राव—"हुजूर स्वयं ही कह चुके हैं कि वह बदनाम है। ऐसे व्यक्ति को लड़की कैसे दूँ। मैं लड़की उसे कभी न दूँगा। हुजूर ऐसी राय मुझे कभी न दें। मैं अपनी संतान का शत्रु नहीं हूँ।"

हाकिम—"क्या तुम्हारा भांजा गांव वालों पर अत्याचार करता है ?"

नेकटिया राव—"इस प्रश्न का उत्तर मैं कुछ न दूँगा। सरकार जांच करलें।"

हाकिम—"वह तुम्हारा सम्बन्धी और बहिन का लड़का है। तुमको क्या उसके साथ सहानुभूति नहीं है ?"

नेकटियाराव—"मुझसे उससे बोल चाल तक नहीं है। वर्षों होगये। न वह मेरे घर आता है न मैं उसके घर जाता हूँ।"

हाकिम—"अच्छा! तुम जाओ।"

वह चला गया।

———

नवाँ अध्याय

पूछगछ और परिणाम (लगातार)

तीसरे दिन फिर पूछ ताछ शुरू हुई। वह लोग विशेषरूप से बुलाये गये जो पहिले दिन आये थे। हाकिम ने इन सबको एक साथ अपने सामने पेश करने का आदेश दिया। यह आये और अदब के साथ फर्श पर बैठ गये।

मियाँ शरफुद्दीन ने कहा—"मित्रो! तुम्हारी दरख्वास्त पर मैं यहाँ भेजा गया। मैंने दो दिन पूछ गछ की किन्तु परिणाम इतना सन्तोष जनक सिद्ध नहीं हुआ जितनी मुझे आशा थी। मैंने इस जाँच में पुलिस या मातहत अफसरों को साथी नहीं बनाया ताकि तुम पर उनका प्रभाव न पड़े। लेकिन तुमने इस काम में सन्तोष जनक साथ नहीं दिया, जैसी मुझे आशा थी।"

आज जांच का अन्तिम दिन है। तुम देखते हो कि जिनको मैंने क्रिस्टिया राव का साथी पाया उनको नहीं बुलाया। अच्छा हो कि तुम दिल खोल कर अपनी शिकायतें सुनाओ। मुझसे जो कुछ हो सकेगा मैं रोकथाम की कोशिश करूँगा।"

रामपुर निवासी समझदार आदमी थे। उनमें से एक पुराना बूढ़ा था। वह कहने लगा—"यह हुजूर की कृपा है। यदि आप हमारी दशा पर ध्यान न देंगे तो और कौन देगा। इसकी हर तरह पर आशा है।"

"लेकिन कठिनाई यह है कि तुम लोग मुँह नहीं खोलते, मैं करूँ भी तो क्या करूँ ?"

"यदि आपने हम से सुन कर काम किया तो बात क्या हुई। कभी सम्भव नहीं है कि आप जैसा अनुभवी हाकिम जांच पड़ताल के समय असलियत को न जान सका हो। हमने तो पहिले दिन ही कह दिया था कि हम अनभिज्ञ हैं। उसी पर जमे हैं और उसी पर जमे रहेंगे। अब भी जो कुछ आप पूछेंगे उसका उत्तर या तो खामोशी होगा या अनभिज्ञता होगा। हम कहें भी तो क्या कहें !"

जिभ्या कहने ही को दी गई है।"

लेकिन हर जगह नहीं। अवसर के अनुसार बोलना ठीक रहता है "

"मैं समझता हूं तुम डरे हुये हो।"

मियाँ शरफुद्दीन बड़े समझदार और अनुभवी अफसर थे। असलियत को पहिले ही समझ गये थे किन्तु पूर्ण विश्वास करना था। उस बूढ़े तेलंगी ब्राह्मण का हाथ पकड़ा। उसे अपने डेरे में भीतर लेगये।

उससे कहा—'बाबा ! क्या तुमको मेरी सहानुभूति का बिश्वास नहीं है ? असली बात को क्यों नहीं बताते ? इस टालमटूल से मन्तव्य क्या है ?"

उस बूढ़े ने उत्तर दिया—"आप सच्चे और दयालु हाकिम हो। इसका सबको निश्चय है लेकिन आप जानते हैं कि नदी में रह कर मगर मच्छ से बैर करना कौन चाहता है।"

शरफुद्दीन—"इसका अभिप्राय क्या है ?"

तेलंगी ब्राह्मण—"अभिप्राय यह है कि आप आज आगये। कल गये। आपका साया तो हमारे सिर पर न रहेगा। कितने हाकिम जिला आते हैं और बदल जाते हैं। लेकिन जिसके बारे में जांच पड़-ताल करने आये हैं उसकी तो तब्दीली नहीं हो सकती। वह तो यहां का यहीं रहेगा। आप तो जाँच करके चले गये। सम्भव है कुछ दंड भी देदिया जाय लेकिन आगे क्या होगा! स्थिति तो ज्यों की त्यों रही।"

शरफुद्दीन—"तुम ठीक कहते हो। राज्य में यह प्रबन्ध बहुत बुरा दोष है, जिसने पटेल और पटवारी को स्थायी मौरूसी अधिकार दे रक्खे हैं और अब तक उसके सुधार का ध्यान नहीं है।"

तेलंगी ब्राह्मण—"इसलिये यह सब जांच पड़ताल व्यर्थ है। इसका कोई परिणाम न होगा।"

शरफुद्दीन—"परिणाम तो होगा। रोक थाम होजायगी।"

तेलंगी ब्राह्मण—"आपको क्या पता है कि गांव में पटवारी और पटेल क्या अत्याचार करते हैं। आपने अपने समय में साधारण रोक थाम भी करदी। आप बदल गये। दूसरा हाकिम आया। वह उसके पंजे में आगया। तब की बात बताइये।"

शरफुद्दीन—"फिर करना क्या चाहिये?"

तेलंगी ब्राह्मण—"आप जांच पड़ताल कीजिये। अपना रास्ता लीजिये। पीछे जो होने को है वह होता रहेगा। दुनियां योंही चलती है। यदि आप यह चाहते हैं कि लोग खुल्लम खुल्ला आपके सामने दावा करें तो उसकी किसी से आशा न रखिये। मैं इस समय निर्भय होकर आप से कह रहा हूँ। सबके सामने मैं कभी न कहूंगा। यदि आप मुझे गवाही में तलब करोगे तो इंकार कर दूंगा और आपको झूठा बनना पड़ेगा। कुछ मामला ही इस तरह का है।"

शरफुद्दीन—"बड़े अफसोस की बात है।"

तेलंगी ब्राह्मण—"अफसोस की बात तो अवश्य है। क्या आपको

इस बात की जानकारी है कि अत्याचारी उसी पर अत्याचार करता है जिस पर उसका बस चलता है। सब के साथ उसका व्यहार एकसा नहीं होता। यहाँ कमजोर और गरीबों की मौत है। एक बात यह हुई। दूसरी बात यह है कि पुलिस को उससे बड़ा लाभ है। वह हमेशा उसके पक्ष में रहेंगे। मातहत हाकिम की मुट्ठी हमेशा गर्म रहती है। उनकी मासिक आमदनी उसके कारण बढ़ती रहती है। कैसे इस बात की आशा की जाय कि सब के सब उसकी सहायता न करेंगे। तीसरी बात यह है कि वह बुराई में अकेला नहीं है। उसके साथ चंडाल चौकड़ी रहती है। एक को सजा हुई, दूसरा सिर पर मौजूद! इसलिये जहाँ तक मेरा विचार है कि इन दीनों की कोई सहायता कर सकता है तो ईश्वर ही कर सकता है।"

शरफुद्दीन—"तुम बड़े चतुर आदमी हो। बहुत दूर की बात सूझती है।"

तेलंगी ब्राह्मण—"मुझ पर अत्याचार नहीं है। मैं झूठ क्यों बोलूं। लेकिन गांव का गाँव दुखी है। उनके दुख से मैं भी दुखी हूं।"

शरफुद्दीन—"यही तो मैं जानना चाहता हूँ।"

तेलंगी ब्राह्मण—"वह आप जान गये हो। दरख्वास्त में जो कुछ लिखा है अक्षरसः सत्य है। मैं इस समय आपसे प्रायवेट तौर पर कह रहा हूँ। पबलिक में कभी इसको इस तरह स्वीकार न करूंगा क्योंकि बाल बच्चे वाला हूँ।"

शरफुद्दीन—"जो कुछ शिकायत की गई है गोलमोल और संक्षिप्त है। किसी व्यक्ति का नाम भी तो इसमें नहीं लिखा है जिसको बुलाकर बयान लूं।"

तेलंगी ब्राह्मण—"व्याख्या और विवरण प्रथम तो सम्भव ही नहीं है। लिखने वाले ने अच्छा किया कि विवरण नहीं दिया। अन्यथा कितने आदमियों की बेइज्जती होती। वह मुंह दिखाने के

योग्य न रहते। किन्तु घटनाओं के खुलजाने से कई आदमियों को आत्म हत्या की सूझती। बस ! मेरी इन्ही बातों से परिणाम निकाल लें। इस गांव के लोग घरों में रह कर खून के आंसू रोते हैं और दिल को मसोस मसोस कर रह जाते हैं।"

शरफुद्दीन—"क्या तुम में कोई मर्द नहीं रहा ? सब के सब नामर्द बन गये हैं।"

तेलंगी ब्राह्मण—"सच्ची बात तो यह है कि मर्दपना तेलंगाना से बिदा होगया है। जब से वॉरगल के ऊपर से रुद्र प्रताप का राज्य गया, उस समय से अब तक उस देश में कोई वीर पैदा नहीं हुआ। तेलंगी जाति को समय की दुर्घटनाओं ने बुरी तरह कुचल दिया। और वह सिर उठाने के योग्य नहीं रहे। आपका विचार बिल्कुल ठीक है। हमारे में एक भी मर्द नहीं रहा। सब के सब नामर्द हैं।"

शरफुद्दीन—"आप बड़े बूढ़े हैं। क्षमा कीजियेगा मैं ने ताने के रूप में यह बात नहीं कहीं।"

तेलंगी ब्राह्मण—"नहीं नहीं, आपने सहानुभूति और मानवीय प्रेम के भाव में आकर ऐसे शब्द कहे हैं और वह बिल्कुल ठीक है। आप तो कहते हैं कि हमारे बीच कोई मर्द नहीं रहा और मैं तो यहां तक कहने और मानने को तैयार हूँ कि हम में एक इंसान भी नहीं रहा। हम पशु से भी गिरे हुये हैं। पशुओं तक में अपनी रक्षा का ख्याल तो होता है। हम इतने नीचे हैं कि पशुओं तक के स्वभाव का हममें पता नहीं है।"

शरफुद्दीन—"मुझे आप लोगों की दशा पर दया आती है। देखिये मैं जाता हूँ। सरकार को इस जांच की रिपोर्ट तो देना ही पड़ेगी और कुछ न कुछ इसका परिणाम अवश्य होकर रहेगा।"

तेलंगी ब्राह्मण—"ईश्वर जाने क्या होगा ! मैं तो यह कहूँगा कि कहीं ऐसा न हो कि मछली कढ़ाई से कूदी और भड़कती अग्नि में गिरी।"

शरफुद्दीन ने उस ब्राह्मण को तसल्ली दी और उसे डेरे से बाहर भेज दिया। उसी रात जांच करने के बाद वहाँ से कूच कर दिया।उसने सरकार को क्या रिपोर्ट दी उसका हाल किसी को मालूम नहीं हुआ।

क्रिस्टिया राव यह तो जानता था कि यह शिकायत उसके विरुद्ध है। रामलू, श्यामू, रंगराव, नरसिंधेलू ने हाकिम जिले की सब बातें उसको सुनादीं। वह मूंछ पर ताव देकर कहने लगा-'देखाजायगा'। उसने पता लगाना चाहा कि शिकायती दरख्वास्त किसने दी है। इसको वह न जान सका। जांच पड़ताल में उसके विरुद्ध एक व्यक्ति ने भी कोई शब्द मुंह से नहीं निकाला। इस ओर से पूरा विश्वास था। अब वह अधिक अकड़ के साथ रहने लगा। लेकिन इस जाँच ने उसे चौकन्ना बना दिया। यह निस्संदेह उस जांच का अच्छा परिणाम कहा जासकता है। किन्तु असावधानी के अत्याचार से सावधानी का अत्याचार हजारों गुना बुरा और दुखदाई होता है।

दसवाँ अध्याय

लगावट

मिर्जा गालिब ने क्या अच्छा कहा है:—

छेड़ खूबाँ से चली जाये असद।
न सही इश्क लगावट ही सही॥

जांच समाप्त होगई। रामपुर में सन्नाटा सा छा गया। किस ने हाकिम जिला या सरकार को शिकायती दरख्वास्त भेजी, इस पर

सब सोचने लगे । जितने मुंह उतनी बातें ! कोई कहता था कि रामपुर से तो पत्र नहीं गया । हाँ इसके लिखवाने और भिजवाने में किसी रामपुर वासी का ही हाथ था । कोई कहता था कि कोई आदमी बाहर से आया था । उसे यहां की स्थिति मालूम हुई और उसने गुम नाम चिट्ठी उड़ा दी । इस विषय पर कई दिनों तक बातें होती रहीं । जैसे जाँच का कोई परिणाम नहीं हुआ वैसेही इस बारे में अन्तिम निर्णय करने का अवसर हाथ नहीं आया । सब उसे भूलने लगे । थोड़े ही दिनों बाद पहली सी स्थिति आगई । मोती बाई की कथा की धूम जिस तरह पहिले स्त्रियों में थी वैसेही पुरुषों में मच गई । रुकावट के दूर करने की देर थी, पुरुष ठीक तरह से आने लगे । जो आता था उसका विश्वासी होकर जाता था । इनको कथा का रस आने लगा और उनके रंग ढंग भी बदलने लगे । भक्ति भाव का प्रचार होने लगा ।

क्रिस्टिया राव को इस कथा की पहिले जानकारी थी लेकिन उसे क्या मालुम था कि यह मोतीबाई कौन है । बकतम्मा बहाने के समय उसे अपनी आंखों से देख लिया । वह उससे आकर मिला होता या मिलने का कोई बहाना निकालता लेकिन जाँच पड़ताल ने उस के साहस को ठेस पहुँचाई । वह कई दिन चुप रहा । अब पुराने मानसिक प्रभावों में फिर से जाग्रति आने लगी । दिल की लगन बुरी होती है । वह और अधिक दिनों तक संतोष न कर सका । एक दिन वह आदमी अपनी चंडाल चौकड़ी को साथ लिये हुये स्वयं कथा में आया । चुपचाप मोतीबाई की कथा सुनी । दूसरे दिन और तीसरे दिन भी आया । उसकी बराबर उपस्थिति को देख गाँव वालों को ढारस बंधने लगी । यदि वह बराबर कथा में आता रहा तो भला आदमी बन जायगा और गाँव से उसकी बुराइयां समाप्त हो जायेंगी लेकिन यह गलती और अनसमझी में पड़े हुये थे । क्रिस्टिया राव वास्तव में कथा सुनने की नीयत से नहीं आता था ।

वह किसी और ही धुन में मस्त था।

मेह का पानी बड़ा स्वच्छ होता है लेकिन भिन्न-भिन्न भूमियों पर उसका प्रभाव भिन्न होता है। उसके कारण बाग में तो गुलाब और खेतों में अन्न पैदा होते हैं, लेकिन बंजर ऊसर में कांटे कटीले उत्पन्न होते हैं। स्वांति की बूंद से बाँस में बंस लोचन, सीप में मोती, हाथी के सिर में गज मुक्ता पैदा होते हैं लेकिन जब वह साँप के मुंह में जाता है तो वही विष हो जाता है। यही दशा शिक्षा की है। लोगों के मन विभिन्न होते हैं। जिसका मन जैसा है और जिनके मन में जैसे प्रभाव पहिले ही से हैं उसे उसी प्रकार की शक्ति मिलती है। यह कुछ ऐसी बात है कि जिससे मनुष्य लाचार है।

क्रिस्टियाराव बराबर कई दिनों तक आया। उसके बाद उसने एक दिन मोती बाई से एकान्त में मिल कर बात चीत करने की इच्छा प्रगट की। पहिले तो इस सीधीसाधी लड़की को ख्याल आया कि शायद प्रति दिन की कथा के प्रभाव से इसके अन्दर कुछ परिवर्तन आगया होगा और उस विषय पर कुछ कहना चाहता होगा। लेकिन उसने कुछ सोच समझ कर एकान्त में मिलने से इंकार कर दिया। बात भी स्पष्ट थी। स्त्री को किसी पुरुष से क्या काम है। विशेष कर ऐसी स्त्री को जिसने एकान्त और भजन पूजा में जीवन व्यतीत करने का प्रण किया हो। उसने बहुत मिन्नत की तब उसने कहा—"अच्छा! मैं दोपहर के समय पोच अम्मा के मन्दिर में आऊँगी। मन्दिर के चबूतरा पर बैठ कर तुम जो कहोगे सुन लूँगी। उसके इतने वाइदे से आशा होगई और वह नियत समय पर वहां आकर प्रतीक्षा करने लगा।

मोतीबाई को वाइदे का ध्यान था। वह भी ठीक समय पर पहुंची। तेलगी जाति में साधारण तथा स्त्री पुरुषों में नमस्कार की रीति नहीं बरती जाती। हां यदि कोई स्त्री तपस्वी, बूढ़ी और गुरुयानी हो तो नमस्कार करने की रीति है। दूसरी दशा में उसकी आव-

श्यकता नहीं समझी जाती। मोतीबाई एक प्रकार से गुरुयानी की हैसियत रखती थी। कथा में आने वाले सब उसे उसी दृष्टि से देखते थे। गुरु भी अल्पायु स्त्री थी। फिर भी उसके पवित्र कर्तव्य की दृष्टि से उसे नमस्कार करते थे। क्रिस्टिया राव ने मोतीबाई को नमस्कार नहीं किया। मोतीबाई को उसकी आवश्यकता नहीं थी। किसी वर्ग या मंडल में हिन्दू स्त्रियां पुरुषों का सम्मान करने से बरी हैं। पुरुषों को अधिकार है कि वह स्त्रियों को नमस्कार करें। युवा स्त्रियां केवल मुस्कराहट से उसका उत्तर देती हैं। माँ या दूसरी बूढ़ी स्त्रियां आशीर्वाद देती हैं।

क्रिस्टिया राव के नमस्कार न करने से मोतीबाई के चित्त में तरह तरह के विचार पैदा होने लगे। लेकिन चूंकि वह आगई थी इसलिये स्वयं ही उससे बोली "कहो! क्या कहते हो? किस विशेष प्रयोजन के लिये मुझसे मिलने की प्रतिज्ञा कराई थी?" उसने उत्तर दिया—"बैठ जाओ तब बातचीत हो।" यह मन्दिर के सामने चबूतरा पर बैठ गई। उसके बैठ जाने पर यह भी बैठ गया किन्तु बोल न सका।

मोतीबाई ने फिर कहा—"कहो क्या कहते हो?"

क्रिस्टिया राव कहने लगा—"जो मुझे कहना है उसको आप पहिले ही से जानती हैं।"

मोतीबाई—"मैं कुछ भी नहीं जानती।"

क्रिस्टिया राव—"हम तुम भद्राचल में मिले थे।"

मोतीबाई—"तो ऐसे मिलने से होता क्या है। रेल, यात्रा तीर्थ आदि पर मिलाप की घटनायें हमेशा हुआ करती हैं। यह साधारण बात है इसको कोई व्यक्ति मुख्य नहीं समझता।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"तो और क्या बात है?"

क्रिस्टियाराव—"हम में तुम में बात चीत हुई थी।"

मोतीबाई—"तो क्या हुआ। यदि राह चलते यात्रियों में बात लाप भी होगया तो क्या होगया। ऐसा तो हुआ ही करता है।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"तो और क्या बात है। कहते क्यों नहीं ? मैं अधिक देर तक तुमसे बात चीत करना नहीं चाहतो। जो कहना हो शोघ्र कहो।"

क्रिस्टियाराव—"मुझे तुम्हारा ख्याल है।"

मोतीबाई—"यदि ख्याल है तो उसे भुला दो। छुट्टी हुई।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"फिर क्या बात है। कहते क्यों नहीं ?"

क्रिस्टियाराव—' यह भूलने भुलाने का ख्याल नहीं है।"

मोतीबाई—"तो फिर वह क्या है ?"

क्रिस्टियाराव—"मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ रहूँ।"

मोतीबाई—"मैं निर्धन भिखारी स्त्री हूँ। मैं किसी पुरुष को अपना नौकर नहीं रख सकती। प्रथम तो मेरे पास कोई काम नहीं जिसके लिये किसी की सेवा की आवश्यकता पड़े। दूसरे मैं वेतन देने में असमर्थ हूँ।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"तो फिर क्या बात है ? स्पष्ट क्यों नहीं कहते ?"

क्रिस्टियाराव—"मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो ?"

मोतीवाई—"लेकिन मैं तो तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती। मुझे किसी के घर रह कर चौका बर्तन या टहलनी बनना स्वीकार नहीं है। मैं स्वतन्त्र हूँ। मुझे किसी के यहां नौकरी की भी आवश्यकता नहीं है। गुजारे के लिये ईश्वर ने पहिले ही से प्रबन्ध कर दिया है।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"तो और क्या बात है। शायद तुम मुझे थोड़े समय

के लिये कथा सुनाने के लिये रखना चाहते हो। सम्भव है तुम्ह घर मेरे स्थान से दूर होगा और तुमको समय पर आने जाने में कष्ट होता होगा।"

क्रिस्टियाराव—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई—"तो और क्या बात है। या तो उसे स्पष्ट कहो या मैं जाती हूँ। तुमने सुना होगा कि सिवाय कथा के समय के मैं किसी को अपने घर नहीं आने देती।"

क्रिस्टियाराव—"मैं स्थायी रूप से तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ। और यह नीयत है कि तुम मेरे साथ स्थायी रूप से रहो।"

मोतीबाई—"तुम तो स्थायी रूप से रखना और रहना चाहते लेकिन मैं तो अस्थायीरूप से भी तुम्हें अपने पास नहीं रक्खूंगी। न स्वयं तुम्हारे पास रहूँगी।

फिर हम तुम क्यों साथ रहने लगे। न कोई प्रयोजन न सम्बन्ध! बड़ी बुआ सलाम! मान न मान मैं तेरा महमान। आखिर यह भी कोई बात है!"

क्रिस्टियाराव—"तुमको मुझ पर दया करनी चाहिये।"

मोतीबाई—'तुमने दया की बात भी अच्छी कही। यदि तुम फकीर और भिखारी होते तो सामर्थ्य रखती हुई तुमको दो चार पैसे डाल देती। मेरे पास पैसा कौड़ी न होता तो कह देती—बाबा जाओ दूसरा दरवाजा देखो। मैं इसे दया कहती हूं। प्रत्यक्ष में तो तुम निर्धन भी मालूम नहीं होते। मोटे ताजे, हट्टे कट्टे! अच्छे वक्ता! फिर मैं तुम पर क्या दया करूँ और कैसे करूँ। तुम्हारा कहना अनुचित है। जाओ! अपना काम देखो।"

क्रिस्टियाराव—"तुम जान बूझ कर अनजान बनी हो।"

मोतीबाई—"और तुम?"

क्रिस्टियाराव—"मुझे तुम्हारे ख्याल ने दीवाना बना दिया है मेरी बुद्धि ठिकाने नहीं है।"

मोतीवाई—"यह मुझे मालूम होता कि मैं किसी बावले दीवाने के साथ अब तक बात चीत करती रही हूँ, तो एक क्षण केलिये भी यहाँ न ठहरती। अब तुम्हारे साथ रहने में मुझे भय प्रतीत होता है। इसलिये लो ! मैं अब जाती हूँ।"

क्रिस्टिया राव ने आवाज दी—"यह बात नहीं है।"

मोतीबाई ने चलते चलते उत्तर दिया—"यह बात नहीं तो और बात होगी। मुझे बावले कुत्ते ने नहीं काटा जो दीवाने की बात सुनूं जिसका न सिर न पैर।"

———

ग्यारहवां अध्याय

जगत गुरु (मुर्शिदे कोनीन)

हिन्दू जाति में नित नये पंथ बनते हैं। पंथों के साथ नित नये गुरु भी पैदा होते रहते हैं। लेकिन दूसरी जगह तो शायद पुरानी बात सब भूल जाते हैं और नई याद रखते हैं। यहाँ नई दशा आती तो अवश्य है लेकिन पुरानी भी कोई नहीं भूलता। पुराने और नये दोनों की मुठभेड़ रहती है।

रामपुर में आज कल के समय के गुरु (मुरशिदे कोनीन) आये। यह शब्द अरबी है। इसका अर्थ लोक परलोक के गुरु है अथवा जगत गुरु करलो। लेकिन जगत गुरु का शब्द इस समय ने त्याग दिया था। मुरशिदे कोनीन के पद को अधिक उपयुक्त मान रक्खा था। शायद यह चमत्कारी पूजा की दृष्टि से होगा क्योंकि दुनियां स्वाभाविक रूप

से चमत्कारों की पुजारी है। साथ में कौन थे ? ४० बैल, १० घ.., पाँच ऊँट, डेरों की कोई गिनती नहीं थी। चेले चाँटे साथ थे। गांव के बाहर डेरा डाल दिया। घंटा शंख की आवाज वायु मण्डल में गूंज उठी। उनके नियम भी खूब थे। जो व्यक्ति दर्शन करने आवे तीन सौ रुपया भेंट दे। अपने घर भोजन करावे तो पाँच सौ भेंट दे। साथ में पुलिस का पहरा। स्थानीय सरकार भी उसकी पाबन्दी करती है।

हुल्लड़ मच गया। गांव वाले डरे। देवाला निकलने का समय आगया। क्रिस्टिया राव पटेल पटवारी था। पुलिस गई। पकड़ा आया। वह उस पकड़ धकड़ से खुश होता था। मुरशिदे कोनीन ने उसके नाम हुक्म नामा जारी किया। "प्रतिदिन. के खर्च केलिये गाँव वालों से चन्दा लो।" उसने फहस्ति खोली। अमीर गरीब सब की जेबें टटोली गईं। मुरशिदे कोनीन का एक दीवान भी था जो बड़ा हिसाबी किताबी था। क्रिस्टिया राव ने उसे झांसा दिया। परी की तरह अपने माया जाल के शीशे में उतार लिया। दोनों ने दोनों ही हाथों से गाँव को लूटना शुरु किया। लूट मच गई। साधु प्रायः कहा करते हैं—जो दे उसका भला जो न दे उसका भला।" लेकिन यहां अजीब दशा थी। जो दे उसका बुरा और जो न दे उसका बुरा। पुराने विश्वासी हिन्दू ईश्वर तक को चाहे अप्रसन्न करलें लेकिन मुरशिदे कोनीन के अप्रसन्न करने का किसी में साहस नहीं था। अप्रसन्न किया नहीं कि यमराज का परवाना उनका गला दबोचने के लिये उसी समय जारी हुआ नहीं ! सब मुरशिदे कोनीन के श्राप को ईश्वरीय कोप समझते थे। सम्भव है लोग उस लिखने को बढ़ा चढ़ा समझते हों। लेकिन जरा दक्षिण में अपनी आंखों, अपने कानों से सुनें तब सच झूठ का पता लगेगा।

सात दिन तक मुरशिदे कोनीन गांव में ठहरे। रामपुर वालों ने यथा शक्ति उनके आदर सत्कार का प्रबन्ध किया। लेकिन काफी

रुपया इनकी इच्छानुसार इकट्ठा नहीं हुआ। सब के घरों में मिट्टी के ही चूल्हे होते हैं। जो कुछ बचा खुचा जमा था उसमें से सबको इस काम के लिये देना पड़ा। लेकिन वह सन्तोष जनक सिद्ध नहीं हुआ। तब और उपाय सोचना पड़ा।

मुरशिदे कोनीन का दिवान अनुभवी और चलता पुर्जा आदमी था। उसने पुराने बूढ़े आदमियों को बुलाकर आज्ञादी—"हिन्दू घरानों में जो स्त्रियाँ विधवा होगई हैं और जिन्होंने धार्मिक रीति के अनुसार अपने सिर के बाल दूर नहीं कराये, वह सब की सब उपस्थित की जाँय और मुरशिदे कोनीन कीं आज्ञा से उनके सिर उस्तरा से मुड़वाये जायें।" यह दक्षिण में बहुत बड़ा अत्याचार है, जो अल्पायु विधवा स्त्रियों पर किया जाता है। इनमें से कुछ तो धरी पकड़ी आईं। सिर मुड़वा लिया और रोती चिल्लाती हुई घरों को चली गयीं। यह ब्राह्मणियाँ थी। बनैनियों को यह पंसद नहीं था। बनियों ने रिशवत की थैलियाँ भेंट की। स्त्रियाँ घरों में छुपकर बैठी रहीं। इन्हें छेड़ना पड़ा। शूद्रानियां इधर उधर भाग गईं। इन पर इतनी कठोरता भी नहीं थी क्योंकि शूद्र विधवा स्त्रियों को हिन्दू शास्त्रों में पुनर्विवाह करने की आज्ञा है।

यह उपाय काम देगया। मुरशिदे कोनीन का खाली खजाना कहीं तक भरगया लेकिन वह पूरा नहीं भरा जासका। तब दीवान ने दूसरा उपाय सोचा। जिन हिन्दुओं ने किसी शकल में छूत छात की पाबन्दी का लिहाज नहीं रक्खा उनपर अमीर होने पर हजार हजार रुपया जुर्माना किया जाय और प्रायश्चित कराया जाय। यह नुसखा भी किसी किसी हद तक लाभदायक सिद्ध हुआ। ऐसे लोगों की संख्या हमेशा कम होती है। यह जाति से निकाले गये थे, परेशान थे। हजार रुपये दिये। प्रायश्चित कराया और मुरशिदे कोनीन ने उन्हें सरलता से जाति में मिला दिया। ब्राह्मण उनके घर पूजा पाठ करने आने लगे। यह जगत गुरु की कृपा के कृतज्ञ भी हुये।

दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

मानव धर्म प्रकाश हिन्दी	-७५
आवागवन उर्फ हिन्दी	१-००
जीवन रहस्य उर्दू	-७५
मनुष्य बनो हिन्दी	-७५
जगत कल्याण हिन्दी	-७५
गत उभार	१-००
आकाशीय रचना	.५०
फकीर वचनामृत	.४०
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेंट भाग १—२	२-२५
संभोग या मौज भाग १,२,	१-७५
५ वर्षीय फकीर अनुभव	.५०
स सतगुरु वक्त	१-५०
ति मार्ग	-२५
व धर्म भाग १ व २	१-७५
महिमा	१-००
नव पुरुष	१-००
म ३ वर्षीय अनुभव	१-२५
आ अन्त	१-२५
साथ सचाई और शान्ति	१.००
अवकाश	१-००
नाम दान	१-००
सार का सार भाग १,२	२.७५
सचाई उर्दू या हिन्दी	.४०
निष्कलंक अवतार हिन्दी	.५०
मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५	५ ००
गरुण पुराण रहस्य	१.००
अद्भुत मोती	.७५
आजादी की कुंजी	.४०
गुरु वन्दना	.६५
कबीरसार शब्द व्याख्या	१.००
शिव फकीर पत्रावली	१.२५
हृदय उद्गार	१.००
अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति	१.००
सुरत शब्द योग	१.००
सत सनातन धर्म अथवा— सत मानव धर्म	३.००
निर्वाण से परे	१.००
रचना का भेद	.७५
बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
ईश्वर दर्शन	१)
मेरी धार्मिक खोज	.५०

महर्षि शिवव्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

महेशत्र की जीवनी उर्दू	५.००
दयायोग ,,	२.५०
विक्कलाद्रुम	१.५०
सप के साधन हिन्दी	.५०
अन्वी	.५०
मर्मश	.५०
गृहस्थ	१.००
जैनन्त	.७५
नव सुधार	,७५
कल्पद्रुम	१.००
सद्विचार	१.५०
आत्मिक उत्कर्ष	१.००
विचारांजलि	१.५०
मूर्ति पूजा रहस्य	०.२५
सत्य सनातन आर्य धर्म	१.२५
रहिमन नीति दोहावली	.५०
योग आसन	.२५
सप्त ऋषि वृतान्त	.७५
राजस्थान की ललित ललनायें	१.००
सत्संग के ८ वचन	०.७५
नन्द भाई की साखी	१.२५
हितोपदेश	.५०

Registered No. L. 15

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकों की सूची

सम्पूर्ण महारामायण सजिल्द	६)	ओ३म् नाविल	२.२५
श्रीमद्भगवद्गीता भाग १-२	२.५०	झलकदार मोती	२.००
नानक योग ३ भाग सजिल्द	४)	गिरहदार मोती	१.००
राधास्वामी योग ६ भाग सजिल्द	५)	शाहवार मोती	१.२५
कबीर योग प्रथम भाग	२)	रंगदार मोती	२.००
" " द्वतीय "	१.७५	दलदार मोती	२.७५
" " तृतीय "	१.५०	कजदार मोती	२.००
शरणागति योग	.७५	शिवजी की अद्भुत कहानी	१.५०
उपासना योग	.७५		
कर्म योग	.७५		
आनन्द योग प्रकाश	२.५०		
Light on Anand yog	.३)		
आत्मिक प्रायमर	.५०		
कबीर आद्यज्ञान प्रकाश	२.००		
पंथ सन्देश	३.००		

पाठ तथा गाने के शब्द

फकीर भनजावली	१.०
शब्द गुन्जार भाग १,२,३	३.५
शब्दों का गुटका	०.५
नन्दू भाई की साखी	१.२
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१.०
कबीर शब्दावली	
नैयर आजम प्र० भा०	१.
मत कबीर की साखी	१
पिंगल साखी	
स्वास्थ्य और भोजन	१
रा० स्वा० मतप्रकाश वचनसार	१
जीवन सुधार	१
अनमोल उपदेश	
विचार दर्पण	१
विचारशक्ति अथवा मनोविज्ञान	१

उपन्यास

शाही पति परायण	१.००
शाही भूत	१.००
शाही डाकू	१.७५
शाही लकड़हारा	२.६०
शाही जादूगरनी	१.५०
शाही भिखारी	२.६०
आबदार मोती	१.७५
ताबदार मोती	१.५०

मिलने का पता—

मैनेजर

शिव साहित्य प्रकाशन मण्डल

कार्यालय — 'शि

पोस्ट दयालनगर, अलीगढ़ उ०प्र०)लेखराज नगर, अलीगढ़(उ०प्र

सतीशचन्द्र मीतल द्वारा दयाल प्रिंटिंग प्रेस, लेखराज नगर, अलीगढ़ में मु
राघव प्रेस के लिए